जून-२०२६ ◆ वर्ष १६ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
जून-२०२६

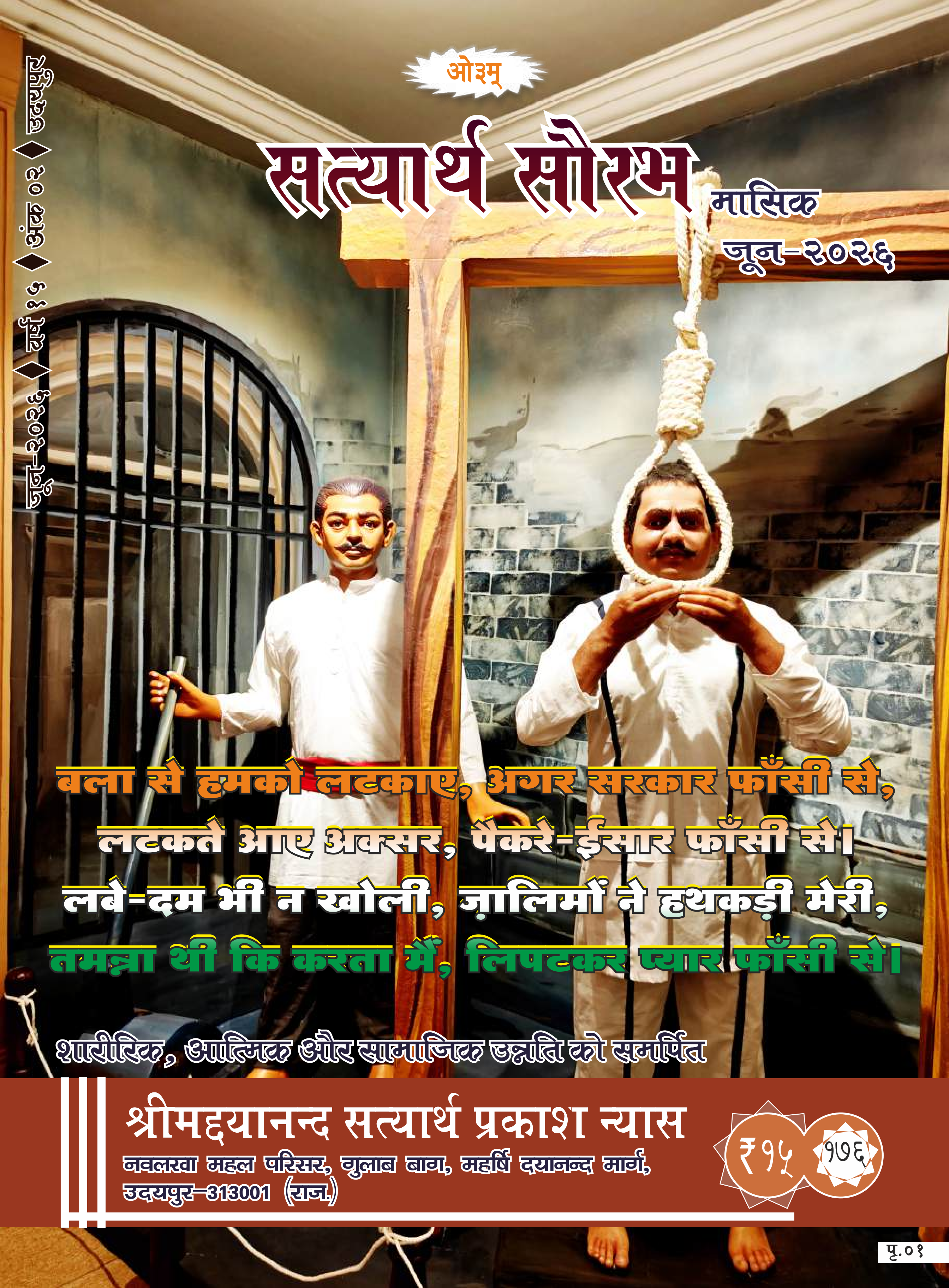

बला से हमको लटकाए, अगर सरकार फाँसी से,
लटकते आए अक्सर, पैकरे-ईसार फाँसी से।
लबे-दम भी न खोली, ज़ालिमों ने हथकड़ी मेरी,
तमन्ना थी कि करता मैं, लिपटकर प्यार फाँसी से।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १५
१७६

सफलता के 6 मूल मंत्र
मेहनत करना
मीठा बोलना
कृपा परम-पिता परमात्मा की
आशीर्वाद माता-पिता का
प्यार संसार का।
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
KITCHEN KING
किचन किंग
CHANA MASALA
चना मसाला
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
CHUNKY CHAT MASALA
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
GARAM MASALA
गरम मसाला
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
PEACOCK
KASOORI METHI
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1500
आजीवन	- 2500 रु.	$ 400
पंचवर्षीय	- 1200 रु.	$ 250
वार्षिक	- 300 रु.	$ 60
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत्
२०८३
दयानन्दाब्द
२०२

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

०७ गोवा इन्क्वीजीशन का कड़वा सच

१३ स्वामी दयानन्द सरस्वती : एक मूल्यांकन

June - 2026

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	4000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.

समाचार २१

हलचल ३०

०४ दीनदयाल गुप्त : एक महान् व्यक्तित्व
०६ वेद सुधा
११ राम प्रसाद बिस्मिल
१७ सत्यार्थ मित्र बनें
१८ स्वभाव बदलते ही स्वर्ग हथेली में
२२ तीर्थयात्रा साध्य नहीं साधन है
२५ जीवन अमृत
२७ स्वास्थ्य- उर्ध्ववात : कारण व चिकित्सा
२८ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष -१५ अंक -०२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

आर्य जगत् की अपूरणीय महान् क्षति

प्रसिद्ध समाजसेवी, आर्य नेता, दानवीर भामाशाह, धर्मपरायण, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उदारमना, आर्य संस्कृति रक्षक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के यशस्वी प्रधान, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संरक्षक माननीय 'दीनदयाल गुप्त' जी का २ मई २०२६ प्रातः १० बजे के करीब आकस्मिक निधन हो गया।

ऐसे लोग विरले ही होते हैं जो एक ग्रामीण परिवेश में जन्म लेकर व्यावसायिक जगत् में पुरुषार्थ और निष्ठा का आश्रय लेकर न केवल शिखर को स्पर्श करते हैं वरन् अपनी पुण्य कमाई को निर्विकार भाव से समाज सेवा में परोपकार के हित समर्पित करते हैं।

पूज्य बाबूजी का जन्म कार्तिक सुदी त्रयोदशी, विक्रम संवत्- १९९९, दिनांक २१ नवम्बर १९४२, शनिवार को ग्राम मानहेरू, जिला भिवानी (हरियाणा) में वैश्य परिवार में हुआ। कक्षा दसवीं तक पढ़ाई गाँव में ही हुई। सन् १९६२ में उनका विवाह हरियाणा में ही हुआ। विवाह के उपरान्त १९६२ में ही कोलकाता को व्यावसायिक रूप में चुना और कोलकाता आकर पूर्व के दो वर्ष सर्विस करने के बाद अपना होजरी का कार्य पार्टनरशिप में आरम्भ किया। प्रसिद्ध होजरी और परिधान ब्राण्ड 'डॉलर इंडस्ट्रीज लिमिटेड' के संस्थापक सदस्यों में से एक थे और कम्पनी के विकास में उनकी अहम भूमिका रही। इस कारण उन्हें पश्चिम बंगाल होजरी एसोसिएशन द्वारा 'हॉल ऑफ फेम' अवार्ड से सम्मानित किया गया।

आप आर्य समाज संस्था में सन् १९६७ से श्री रामकुमार जी गुप्ता जो कि आर्य समाज बड़ा बाजार के सक्रिय सदस्य थे। उनके कारण आर्य समाज बड़ा बाजार से जुड़े और जुड़कर बहुत कम समय में ही आर्य समाज बड़ा बाजार के अन्तरंग सदस्य बने। तत्पश्चात् समाज के सभी पदों पर रहते हुए आप संरक्षक सदस्य और बंगाल प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे। श्री दीनदयाल जी गुप्त आजीवन अनेक गुरुकुलों और आर्य समाजों में और आर्यसमाज की संस्थाओं को सात्विक सहयोग करते रहे। छह दशक तक आपने आर्य समाज की विचारधारा को आगे बढ़ाने का हरसम्भव प्रयत्न किया। इस अवधि में आपने भारत देश तथा विदेशों में आर्य महासम्मेलनों में सक्रिय भूमिका निभाई।

उनकी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना रहती थी कि आर्य वैदिक विचारधारा को जितना हो सके बढ़ाने की कोशिश करूँ ताकि देश में अंधविश्वास व अविद्या को सर्वथा निर्मूल किया जा सके जिससे मानव जाति का कल्याण हो और पुनः हमारा देश पूर्व की भाँति विश्वगुरु का गौरव प्राप्त कर सके।

८४ वर्ष की आयु में ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा, विक्रम संवत्-

२०८३, दिनांक २ मई २०२६, शनिवार को आपका कोलकाता में आकस्मिक निधन हुआ। श्रद्धेय श्री दीनदयाल जी गुप्त का हमारे बीच न रहना आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। सहसा विश्वास करने को मन नहीं कर पा रहा है कि उन जैसी महान् विभूति इस संसार से प्रयाण कर चुकी है। यह समाचार पा सभी आर्यजन स्तब्ध रह गये हैं। नियति के निर्मम हाथों ने उन्हें हमसे विलग कर दिया।

जहाँ तक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का प्रश्न है पूज्य बाबूजी जब से इस न्यास के न्यासी बने तब से अब तक न्यास के कार्यों और गतिविधियों को

सम्बल प्रदान करने हेतु सदैव अग्रणी रहते थे। उनका भी यही मानना था कि महर्षि दयानन्द जैसी देवतुल्य विभूति का कोई तो एक ऐसा स्मारक बने जो उनकी शिक्षाओं को दिग्दिगंत में प्रसारित कर सके और इसीलिए यह स्मारक प्रेरक होने के साथ-साथ अत्यन्त भव्य और आकर्षक होना चाहिए। जब न्यास में संस्कार वीथिका, मिनी थियेटर, राष्ट्र-गौरव भित्ति और पंचमहायज्ञ भित्ति के निर्माण का प्रस्ताव आया तो आपने माननीय सुरेश चन्द्र जी के साथ मुक्त हस्त से इस हेतु अर्थ सहयोग प्रदान कर वह स्थितियाँ निर्मित कर दी जिनके अन्तर्गत आज नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र सम्पूर्ण विश्व में आर्य समाज का परचम फहराए हुए है।

मुझे यह कहने और लिखने में तनिक भी संकोच नहीं है कि अगर बाबूजी ने प्रारम्भिक सहयोग न किया होता तो नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र कभी नहीं बन पाता।

यह तो अर्थ सहयोग की बात है इसके अतिरिक्त उनके अनुभव से जो अमृत हमने चखा उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। उनके स्नेह और ममता से भरी हुई आँखों ने जिस प्रकार का आत्मविश्वास भरा वह भी अतुलनीय है। उनके गुणों के बारे में, हम पर उनकी कृपा के बारे में कितना भी लिखें वह कम ही है।

- अशोक आर्य
अध्यक्ष- नवलखा महल
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

ओ३म्

वेद सुधा

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयनित।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।। - ऋग्वेद ८/२/१८; अथर्ववेद २०/१८/३

ऋषिः– मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चागिंरसः।। **देवता–** इन्द्र।। **छन्दः–** आर्षीगायत्री।।

विनय– आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वंचित हो जाते हैं, अतः आलस्य करने वाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूँ कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं- इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन (Discipline) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है- बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर- भूल-चूक से बिल्कुल रहित होकर- कर रहे हैं।

ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जोकि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किए हुए हैं, अतः आलस्य-प्रमाद करनेवाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं? अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार-बार दण्ड दे-देकर उन्हें पुनः-पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ-कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना इस संसार-यज्ञ के लिए सोम-रस का सेवन करना है।

तनिक देखो- इन देवों के प्यारे लोगों को देखो- जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम-रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्तव्य में सदा जाग्रत, कटिबद्ध, संनद्ध रहते हुए देव-तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ– **देवाः=** देव लोग **सुन्वन्तम्=** यज्ञकर्म करते हुए की **इच्छन्ति=** इच्छा करते हैं। **न स्वप्नाय स्पृहयन्ति=** निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। **अतन्द्राः=** स्वयं आलस्य-रहित ये देव लोग **प्रमादम्=** गलती, भूल करने वाले का **यन्ति=** नियमन करते हैं।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वैदिक विनय

गोवा इन्क्वीजीशन का कड़वा सच

सत्य एक ही होता है। यह भी सत्य है, वह भी सत्य है, ऐसा कहना भ्रामक है। उदाहरण के लिए, ईश्वर एक है, परन्तु कुछ लोग यह मानते हैं कि ईश्वर बहुत सारे हैं, कुछ ऐसे भी हैं जो ईश्वर के अस्तित्व को ही नकार देते हैं। यहाँ तीन प्रश्न उठते हैं। **प्रथम,** क्या सत्य का अनुसन्धान होना चाहिए? महर्षि दयानन्द का उत्तर है- निश्चित होना चाहिए। केवल मनुष्य जाति को विवेक और तर्क क्षमता प्रदान की गई है, जिसका प्रमुख उद्देश्य सत्य का अनुसन्धान है। वे सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

'सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।' (मुण्डक ३/१/६)

'सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय, और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्ब से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी नहीं, सत्यार्थप्रकाश करने से हटते।' (सत्यार्थ प्रकाश भूमिका पृष्ठ-४) तो सत्य का अनुसंधान करना और सत्य को ग्रहण करना मनुष्यता का आभूषण है।

दूसरा प्रश्न, सत्य को निश्चित करने का प्रकार क्या है? इसका उत्तर है- सत्य तक पहुँचने के लिए शास्त्रार्थ वह पद्धति है। इस संवाद प्रक्रिया को बढ़ावा मिलना चाहिए। भारतवर्ष में युगों से यह होता रहा है। महर्षि दयानन्द के पूरे समय को देखें, तो यह मानना पड़ेगा कि अंग्रेजों के समय भी उनके सत्य पर बोलने पर कोई पाबन्दी नहीं लगी। यहाँ तक कि वायसराय, कलेक्टर और न जाने कितने अंग्रेज अधिकारियों के समक्ष उन्होंने बाइबल की समीक्षा खुलकर की, क्योंकि नीयत साफ थी, किसी का अपमान करना उद्देश्य नहीं था। इसीलिए अपने धर्म का प्रचार-प्रसार भी आपत्तिजनक नहीं था, क्योंकि सब कुछ तर्क पर आधारित था।

तीसरा प्रश्न कि सत्य का निश्चय हो जाने के पश्चात् क्या वह सब पर थोप देना चाहिए? उसकी इच्छा के विरुद्ध उसको बाध्य करना चाहिए कि वह ऐसा माने? इसका उत्तर है, नहीं। माननीय विद्वान् लोगों का कार्य सत्य का अनुसंधान कर उसका प्रकाश करना है।

इसके पश्चात् तो प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक के अनुसार कार्य करें। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

'इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्याऽसत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। (सत्यार्थ प्रकाश भूमिका पृष्ठ-४) आज लगता है, युगों-युगों से चली आ रही यह

व्यवस्था स्वीकार्य नहीं है।

यहाँ थोड़ी सी बात श्री गौतम खट्टर की। उनको बहुत ज्यादा तो नहीं सुना, परन्तु वे अच्छे वक्ता हैं। तर्क और सत्य पर आधारित बातें उनकी होती हैं। हमारी उनसे मुलाकात यही नवलखा महल, उदयपुर में हुई। वे अनायास इसके अवलोकन हेतु आए और लगभग तीन-चार घण्टे रुके। जिस प्रकार यहाँ घूम-घूम कर उन्होंने महर्षि दयानन्द के विचार बिन्दुओं और शिक्षाओं को बड़े आनन्द से सुना, वे ऋषि-भक्त ही प्रतीत हुए। उनकी राजनीतिक निष्ठा क्या है, यह हमें नहीं पता, और नहीं उससे कोई हमारा सरोकार है। गोवा सरकार ने सेंट फ्रांसिस जेवियर और गोवा में इनक्विजिशन के बारे में उनके प्रवचन को लेकर उनको गिरफ्तार कर लिया, उनके छोटे भाई को गिरफ्तार कर लिया, यह जानकर दुःख हुआ।

आज की सरकार, जो यह दावा करती है कि वह भारत को विश्व गुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित करना चाहती है, क्या उसे पता है कि भारतीय जीवन पद्धति में **"वादे वादे जायते तत्वबोध"** का सूत्र रचा-बसा है? इसीलिए यहाँ विवाद की नहीं, संवाद की प्रक्रिया है, शास्त्रार्थ की प्रक्रिया है, और इन सबका एक उद्देश्य है, सत्य को सामने आना चाहिए। परन्तु सत्य कहने का साहस करने वाले को यदि आपकी सरकार जेल में ठूंस देगी, तो भारत को विश्व गुरु बनाने का जो आप दावा कर रहे हैं, वह केवल लफ्फाजी है, आपका संकल्प नहीं।

सत्य को सत्य कहना कभी कोई अपराध हो ही नहीं सकता। हाँ, उसमें घृणा और द्वेष नहीं होना चाहिए। परन्तु गोवा सरकार ने एक आर्य नवयुवक, श्री गौतम खट्टर को सेंट जेवियर, गोवा इनक्विजिशन की सच्चाई बताने पर जेल में ठूंस दिया। क्या यही भारतीय संस्कृति को समृद्ध करने का पथ है? हाँ, गौतम खट्टर ने यदि असत्य वादन किया है, तो उन्हें सजा मिलनी चाहिए। परन्तु उन्होंने सच कहा है, यह उन्हें बन्दी बनाने वाले भी जानते हैं।

अगर यह चलता रहा, तो सत्य कहने का सिलसिला ही बन्द हो जाएगा। आप आने वाली पीढ़ियों को सत्य इतिहास

किस प्रकार बताएँगे? औरंगजेब, अकबर, महमूद गजनबी इनका सत्य लोगों के सामने लाना आपको राजनीतिक रूप से लाभकारी लगता है, परन्तु जेसुइट ईसाइयों का वह काला चेहरा, जो अपने को या दुनिया जिसको सन्त की उपाधि देती है, ओपन सीक्रेट के रूप में उसकी सच्चाई है, उसका उजागर करना आपको अनुकूल नहीं लगता। भाई खट्टर की गिरफ्तारी आपकी हिपोक्रेसी है।

भाई गौतम खट्टर की जमानत का स्वागत करते हुए हम यह भी जानते हैं कि यह लड़ाई लम्बी चलेगी। सत्य प्रेमियों को अपने-अपने प्रकार से इसमें सहभागी बनना चाहिए।

अब जो लोग फ्रांसिस जेवियर जैसे लोगों को सन्त की उपाधि देकर उनको प्रतिष्ठित करते हैं, और उनके प्रपंच में आकर आज भी जेवियर को सन्त मानते हैं, उनकी बात संक्षेप में कर लें।

आज भी गोवा में ३ दिसम्बर को प्रतिवर्ष सेंट फ्रांसिस जेवियर के सम्मान में वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। यह गोवा का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है। लाखों श्रद्धालु भारत और विदेश से आते हैं। जेवियर के अवशेष (चाँदी के ताबूत में) दर्शन हेतु रखे जाते हैं।

'सेंट' जेवियर पर मौजूदा लेख बताते हैं कि उन्हें हिन्दुओं से इतनी घृणा थी कि वह उन्हें विधर्मी, काफिर तक कहकर सम्बोधित करते थे। वहीं ब्राह्मणों से उन्हें इतनी दिक्कत थी कि उन्हें वे 'धोखेबाज और झूठा' बताकर पेश करते थे, ताकि समाज का विश्वास उन पर से उठ जाए। इसके अलावा वे ईसाई धर्म में लोगों को लाने के लिए

ईसाई धर्म की खूबियों के अलावा यह बताते थे कि कैसे हिन्दू और उनके देवी-देवता बुरे होते हैं।

फ्रांसिस के बारे में कहा जाता है कि उनके होते हुए गोवा में इतनी तेजी से धर्मांतरण की रफ्तार बढ़ी थी कि वे कई बार पूरे के पूरे गाँव को ईसाई बनवा देते थे। फिर हिन्दू बच्चों को मन्दिर में ले जाते थे और उनसे देवी-देवताओं को गाली देने को कहते थे, मूर्तियाँ तोड़ने, उन पर थूकने और उन्हें रौंदने के लिए कहते थे। साथ ही उन कलाकारों को भी धमकी दी जाती थी, जो मूर्तियाँ बनाने का काम करते थे।

धर्मांतरण हेतु उन्होंने एक काम और किया था, जिन बच्चों के पिता की मृत्यु हो जाती थी, उनके परिवार के अन्य सदस्य होते हुए भी उन्हें अनाथ मानकर चर्च की शरण में ले लिया जाता था, ताकि वे क्रिश्चियन बन सकें। क्या आपको यह कुछ वैसा नहीं लगता, जैसा अंग्रेज लोग पुत्रहीन राजा के शासन को अधिग्रहीत कर लेते थे?

सेन्ट फ्रांसिस जेवियर ने अपने पत्रों में गोवा के हिन्दुओं को "दुष्ट", "झूठे", "धोखेबाज" और "अपवित्र जाति" के रूप में चित्रित किया। उनके समकालीन पत्र (१५४२-१५४६) पुर्तगाल के राजा जॉन-III और जेसुइट सहयोगियों को लिखे गए थे। उनसे यह सब स्पष्ट होता है। इन्हीं सन्त कहे जाने वाले मतान्ध के सुझाव पर कुख्यात गोवा इनक्विजिशन की स्थापना की गई, जहाँ ऐसी-ऐसी यातनाओं का आविष्कार किया गया, जिन्हें पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इतिहासकारों का मानना है कि ये पत्र जेवियर की क्रूरता और मतान्धता के पर्याप्त प्रमाण हैं।

सीता राम गोयल (Papacy: Its Doctrine), अनन्त प्रियोलकर (The Goa Inquisition) ने पुर्तगाली अभिलेखों से इनका अनुवाद किया है।

उदाहरण हेतु तीन पत्र उद्धृत हैं। ये जेवियर ने पुर्तगाल के शासक को लिखे थे।

प्रथम पत्र (1542, गोवा से)-

"महाराज, गोवा में मिशनरी कार्य तेजी से हो रहा। हजारों गरीब मछुआरे ईसाई बने। लेकिन ब्राह्मणों का प्रभाव बहुत है, वे दुष्ट और चालाक हैं। वे लोगों को रोकते हैं। मन्दिरों को तोड़ने का आदेश दीजिए। मूर्तियों को जलाया जाए।" इसका प्रभाव यह हुआ कि ७६० मन्दिर नष्ट हुए।

द्वितीय पत्र (1545, कोचीन से)-

"जब सभी लोग बपतिस्मा ले लेते हैं, तो मैं उनके झूठे देवताओं के सभी मन्दिरों को नष्ट करने और सभी मूर्तियों को टुकड़े-टुकड़े करने का आदेश देता हूँ। मैं आपको यह नहीं बता सकता कि यह सब होते हुए देखकर मुझे कितनी खुशी हो रही है, उन लोगों द्वारा मूर्तियों को नष्ट होते हुए देखना, जो हाल ही में उनकी पूजा करते थे। मैं सभी शहरों और गाँवों में ईसाई धर्म के सिद्धान्तों को स्थानीय भाषा में लिखकर छोड़ता हूँ और साथ ही यह भी बताता हूँ कि सुबह और शाम के स्कूलों में इसे किस तरह पढ़ाया जाना चाहिए।"

तृतीय पत्र (16 मई 1546, मलक्का से)-

"महाराज, गोवा में पवित्र इंक्विजिशन स्थापित करें। यहाँ के न्यू क्रिश्चियन यहूदी/मुस्लिम कानून मानते हैं। ब्राह्मण सबसे दुष्ट हैं। उनकी काली, बदसूरत मूर्तियाँ तेल से सनी हैं। इन मन्दिरों को तोड़ना चाहिए। पुजारी भेजें, जो कठोरता से जाँच करें।" इसके पश्चात् फ्रांसिस की मृत्यु के पश्चात् १५६० में कुख्यात गोवा इंक्विजिशन शुरू हुआ।

फ्रांसिस एवं गोवा इनक्विजिशन ने जो अत्याचार किए, उनके अंश ऐतिहासिक दस्तावेजों में सुरक्षित हैं। बाकी सब विनष्ट कर दिए गए। पाठकों को अत्यन्त संक्षेप में संकेत हेतु एक ऐसे लेखक की आत्मस्वीकृति दे रहे हैं, जो इस अत्याचार के शिकार हुए थे।

चार्ल्स डेलॉन का मामला-

प्रमुख इतिहासकार अनन्त प्रियोलकर की पुस्तक "The Goa Inquisition" (१९६१) में डॉ. चार्ल्स डेलॉन (फ्रांसीसी चिकित्सक, ईसाई) का विस्तृत वर्णन है। १६७० ई. में डेलॉन गोवा पहुँचे, स्थानीय ईसाइयों को चिकित्सा दी। वे कन्वर्टेड हिन्दुओं (क्रिप्टो-हिन्दू) की गोपनीय प्रथाओं (पूजा, तुलसी, दीपावली) पर चर्चा करते थे।

पुर्तगाली पुजारियों ने उन्हें जुडाइजिंग (यहूदी प्रथाएँ अपनाने) और क्रिप्टो-हिन्दू प्रचार का दोषी ठहराया। डेलॉन ने कन्वर्ट्स को ईसाई बनने के बाद भी हिन्दू रीति अपनाने की अनुमति का पक्ष लिया। यह बात उनको सह्य नहीं थी। गोवा इंक्विजिशन ने डेलॉन को गिरफ्तार किया। उन पर कन्वर्टेड ईसाइयों को "पुरानी मूर्तिपूजा" जारी रखने की सलाह देने के आरोप लगाए और गिरफ्तार कर अमानवीय यातनाँ दीं, जिनमें-

पुली टॉर्चरः हाथ-पैर बाँधकर छत से लटकाया, २०-३० मिनट तक खींचा।

वाटर टॉर्चरः मुँह में कपड़ा ठूँसकर पानी डाला, डूबने का भ्रम।

फायर टॉर्चरः नंगे पैर गर्म कोयले पर चलाया।

जेल में भूखा-प्यासा रखा, बीमार किया, आदि सम्मिलित थीं।

डेलॉन को ५ वर्ष तक यह सब सहना पड़ा, परन्तु बाद में फ्रांस के दबाव पर उनको मुक्त किया गया।

इन्हीं डेलॉन ने "Relation de l'Inquisition de Goa" (१६८७) लिखी, जो इंक्विजिशन की क्रूरता उजागर करती है, यद्यपि पुर्तगाल ने इसे प्रतिबन्धित किया।

अब 'सेंट' जेवियर का काल बीते कई सदी हो चुकी हैं। आज तथाकथित धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार जो हमें उनके बारे में बताते हैं, हम उसी को जानते हैं, लेकिन अगर लोग सुनी-सुनाई बातों से हटकर स्वयं समझना चाहें, तो इतिहास उपलब्ध है, जो क्रूरता की दास्तां कहता है।

गोवा इनक्विजिशन की क्रूरता के प्रमाण आज भी गोवा में बिखरे हैं, कोई न देखना चाहे तो क्या किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, **'हाथ कातरो खम्भ'** गोवा के ओल्ड गोवा में स्थित एक काला बेसाल्ट स्तम्भ है, जिसे स्थानीय भाषा में "पेलोरिन्हो नोवो" (नया दण्ड स्तम्भ) कहा जाता है। यह पुर्तगाली काल (फ्रांसिस जेवियर और गोवा इंक्विजिशन के समय) के अमानवीय अत्याचार का प्रतीक है।

व्यक्ति को इस स्तम्भ से बाँधा जाता। हाथ ऊपर बाँधकर लकड़ी के तख्ते से पीटा जाता। धर्मांतरण न मानने पर हथियार से अंग काटे जाते। और मृत शरीर सड़क पर छोड़ दिया जाता। नादानी देखिए, लोग इसे पर्यटन स्थल मान वहाँ जाते हैं।

यही open secret गौतम खट्टर ने कहा था। आप अब विचार करें कि क्या यह सत्य कथन उनका दोष है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

जन्म जयन्ती पर विशेष

क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल

भारतवर्ष को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त कराने में यूँ तो असंख्य वीरों ने अपना अमूल्य बलिदान दिया परन्तु राम प्रसाद बिस्मिल एक ऐसे अद्भुत क्रान्तिकारी थे। जिन्होंने निर्धन परिवार में जन्म लेकर साधारण शिक्षा के बावजूद असाधारण प्रतिभा और अखण्ड पुरुषार्थ के बल पर हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ के नाम से देशव्यापी संगठन खड़ा किया। जिसमें एक-से-बढ़कर एक तेजस्वी व मनस्वी नवयुवक शामिल थे। जो उनके एक इशारे पर इस देश की व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन कर सकते थे और यही हुआ भी। बिस्मिल ने ब्रिटिश साम्राज्य की चूलें हिला दीं।

बिस्मिल केवल सशस्त्र क्रान्ति के उद्घोषक नहीं थे बल्कि एक बहुत अच्छे साहित्यकार और लेखक भी थे जिनकी लेखनी ने अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय युवकों के मन में विद्रोह की नींव डाल दी।

बिस्मिल की पहली पुस्तक सन् १९१६ में छपी थी जिसका नाम था- 'अमेरिका की स्वतन्त्रता का इतिहास।'

राम प्रसाद बिस्मिल जब गवर्नमेण्ट स्कूल शाहजहाँपुर में आठवीं कक्षा के छात्र थे तभी संयोग से स्वामी सोमदेव का आर्य समाज भवन में आगमन हुआ। मुंशी इन्द्रजीत ने रामप्रसाद को स्वामीजी की सेवा में नियुक्त कर दिया। यहीं से उनके जीवन की दशा और दिशा दोनों में परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। इससे पूर्व रामप्रसाद का जीवन असंयमित था, पर अब वह आदर्श दिनचर्या का प्रतीक बन गया।

आर्य समाज के सिद्धान्तों से ब्रह्मचर्य, आत्मिक दृढ़ता आई। स्वामी सोमदेव ने राजनीति, क्रान्ति की बातें

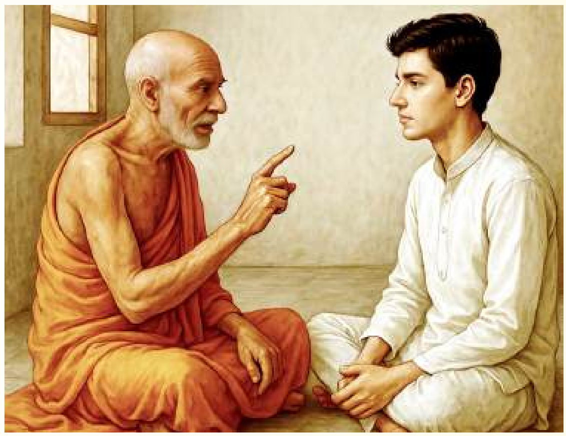

बताईं, जो बिस्मिल के भावी जीवन की आधार सिद्ध हुईं।

उनका जीवन बड़ा शुद्ध और सरल था। प्रतिदिन नियमित योग और व्यायाम के कारण शरीर बड़ा पुष्ट और बलशाली तथा मुखमण्डल ओज और तेज से व्याप्त था। उनके तेज और पुरुषार्थ की छाप उन पर जीवन भर बनी रही।

एक ओर सत्यार्थ प्रकाश का गम्भीर अध्ययन व दूसरी ओर स्वामी सोमदेव के साथ राजनीतिक विषयों पर खुली चर्चा से उनके मन में देश-प्रेम की भावना जागृत हुई। सन् १९१६ के कांग्रेस अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष पं. जगत नारायण 'मुल्ला' के आदेश की धज्जियाँ

बिखेरते हुए रामप्रसाद ने जब लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की पूरे लखनऊ शहर में शोभायात्रा निकाली तो सभी नवयुवकों का ध्यान उनकी दृढ़ता की ओर गया।

अमेरिका की स्वतन्त्रता का इतिहास रामप्रसाद द्वारा लिखित थी। रामप्रसाद ने यह पुस्तक अपनी माताजी से दो बार में दो-दो सौ रुपये लेकर प्रकाशित की थी। इसका उल्लेख उन्होंने अपनी आत्मकथा में किया है। यह पुस्तक छपते ही जब्त कर ली गयी थी। बाद में जब काकोरी काण्ड का अभियोग चला तो साक्ष्य के रूप में यही पुस्तक प्रस्तुत की गयी थी। साहित्य के माध्यम से क्रान्ति भाव जागृत करने हेतु वे साहित्य वितरित करते थे। 'देशवासियों के नाम सन्देश' और 'मैनपुरी की प्रतिज्ञा' पैम्फलेट वितरित किए। इनमें सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान था।

काकोरी काण्ड के विषय में पाठक जानते ही हैं, यह अभियान भारतीय क्रान्ति के इतिहास में सर्वाधिक चर्चित घटनाओं में एक है। अनेक क्रान्तिवीर पकड़े गए। परन्तु काकोरी के बाद बिस्मिल पकड़े नहीं गए। वे यमुना में कूद गए, जब घण्टों बाहर न निकले तब उन्हें मृत मान लिया गया।

परन्तु बिस्मिल ने ग्रेटर नोएडा (तत्कालीन बियाबान) के कीकर (बबूल) के जंगलों में शरण ली। यहाँ रामपुर जागीर गाँव में गुर्जर परिवारों के साथ छिपे रहे, गाय-भैंस चराईं और किताबें लिखीं। उनकी बहन ने भी भेष बदले हुए भाई को पहचाना नहीं। यह पलायनावस्था १९१९-१९२० तक चली।

काकोरी काण्ड की जाँच करते हुए सी.आई.डी. ने गम्भीर छानबीन करके सरकार को इस बात की पुष्टि कर रिपोर्ट दी कि काकोरी ट्रेन डकैती क्रान्तिकारियों का एक सुनियोजित षड्यन्त्र था। पुलिस ने काकोरी काण्ड के सम्बन्ध में जानकारी देने व षड्यन्त्र में शामिल किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करवाने के लिये इनाम की घोषणा के विज्ञापन सभी प्रमुख स्थानों पर लगा दिये। इसका परिणाम यह हुआ कि पुलिस को घटनास्थल पर मिली चादर में लगे धोबी के निशान से इस बात का पता चल गया कि चादर शाहजहाँपुर के ही किसी व्यक्ति की है। शाहजहाँपुर के धोबियों से पूछने पर मालूम हुआ कि चादर बनारसी लाल की है। बिस्मिल के व्यापारिक साझीदार बनारसी लाल ने काकोरी ट्रायल में "अचूक गवाही" दी। प्रसिद्ध इतिहासकार आर. सी. मजूमदार लिखते हैं कि- 'पुलिस ने जानबूझकर उनके पुराने व्यक्तिगत झगड़े (व्यापार विवाद) का लाभ उठाया। बनारसी लाल से मिलकर पुलिस ने सारा भेद प्राप्त कर लिया।' यह भी पता चल गया कि ९ अगस्त १९२५ को शाहजहाँपुर से उसकी पार्टी के कौन-कौन लोग शहर से बाहर गये थे और वे कब-कब वापस आये? जब खुफिया तौर से इस बात की पुष्टि हो गयी कि राम प्रसाद बिस्मिल, जो एच.आर.ए. के लीडर थे, उस दिन शहर में नहीं थे तो २६ सितम्बर १९२५ की रात में बिस्मिल के साथ समूचे हिन्दुस्तान से ४० से भी अधिक लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। तथाकथित न्यायिक निर्णय क्या होगा यह तो सभी जानते थे।

बिस्मिल HRA के निर्विवाद नेता थे। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का संघीय गणराज्य वाला घोषणापत्र पूर्णतः बिस्मिल ने लिखा। इसमें "संयुक्त राज्य भारत" की कल्पना थी, जो आज के भारत के संविधान से ३० वर्ष पूर्व थी। ये प्रसंग बिस्मिल को रणनीतिकार और विचारक के रूप में स्थापित करते हैं।

काकोरी केस के दौरान बिस्मिल समेत HRA सदस्यों ने राजनीतिक कैदी का दर्जा माँग भूख हड़ताल की। शिव वर्मा ने बिस्मिल की आत्मकथा को जेल से अंडरवियर में छिपाकर निकाला, जिसे गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रकाशित किया। यह फाँसी से ३ दिन पूर्व पूरी हुई।

वेदमन्त्रों के पाठ के साथ फांसी के फन्दे को चूम लेने वाले भारत माता के इस महान् सपूत को शत्-शत् वन्दन। भारत माता के इस महान सपूत के अवदान के लिए समस्त भारतवासी सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग

भारतीय पुनर्जागरण के सभी नेताओं में स्वामी दयानन्द सरस्वती निःसन्देह भारत के एक महत्वपूर्ण विशालकाय व्यक्तित्व थे। उन्होंने हजारों लोगों के जीवन पर प्रभुत्व जमाया और उनका प्रभाव आज भी आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से जारी है। भारत के इस महान् पुत्र ने लाखों भारतीयों के मन को घेर रही अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए कठिन परिश्रम किया, और अंधविश्वास, मिथ्या, कट्टरता के दुर्गों को ध्वस्त किया, जो सदियों से एक अधीनस्थ चर्च व्यवस्था द्वारा सावधानीपूर्वक निर्मित किए गए थे। भारतीय राष्ट्र का वैज्ञानिक और तार्किक आधारों पर पुनर्निर्माण करने के उनके प्रयास, जिससे इसे राजनीतिक मुक्ति प्राप्त करने के योग्य बनाया जा सके, अत्यधिक प्रशंसनीय हैं। उन्होंने भारतीय राष्ट्र और समाज का पुनर्निर्माण करने तथा देशभक्ति को जागृत करने के उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की। निःसन्देह वे एक महान् पुरुष थे जिन्होंने मानवजाति के इस महान् उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत सब कुछ का बलिदान कर दिया।

भगवान बुद्ध की भाँति समृद्धि और ऐश्वर्य में जन्मे, जब उनके माता-पिता ने विवाह के लिए बाध्य किया तो उन्होंने घर त्याग दिया और ज्ञान तथा सत्य की खोज में हिमालय तथा देश के अन्य क्षेत्रों में भ्रमण किया। आधुनिक भारत के सभी नेताओं में वे शायद सबसे व्यापक रूप से यात्रा करने वाले थे। वे १८४६ ई. में संन्यासी बने और उस वर्ष से उनके मृत्यु वर्ष (१८८३) तक, उन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण किया और न केवल शास्त्रों तथा वेदों का गहन अध्ययन किया बल्कि समकालीन जीवन के सभी पहलुओं का भी। दयानन्द शायद पहले राष्ट्रवादी थे जिन्होंने अंग्रेजियत का विरोध किया और देश की प्रतिभा को पुनः उद्‌बुद्ध करने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास किया। पश्चिमीकृत भारतीय नेताओं ने अधीनस्थ चर्च व्यवस्था द्वारा सावधानीपूर्वक बुने गए अंधविश्वास मिथ्या और कट्टरता के जाल पर सीधी चोट की, लेकिन उनके व्यक्तिगत जीवन में वे जो प्रचार करते थे उसे वे स्वयं अपना नहीं सके। राजनीतिक क्षेत्र में समाज के पश्चिमीकृत वर्गों ने ब्रिटिश शासन का विरोध नहीं किया; बल्कि उन्होंने इसे "भारत को उसके मुस्लिम शासकों की अत्याचार से मुक्त करने के लिए 'भगवान का कार्य' के रूप में सराहा। उन्होंने ब्रिटिश राज को एक राष्ट्रीय आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया। सुधार के पश्चिमीकृत नेताओं में से एक सबसे प्रबुद्ध सुधारक ने कहा- "विजय बहुत कम ही बुराई होती है जब विजयी लोग विजित लोगों से अधिक सभ्य होते हैं, क्योंकि पूर्व वाले उत्तरार्ध को सभ्यता के लाभ प्रदान करते हैं।" एक अन्य सुधारक कहता है- यह (राज) भगवान के हाथों में एक साधन है जो इस अपमानित देश को राष्ट्रों के पैमाने पर

ऊँचा उठाने के लिए है। यहाँ तक कि भारतीयों का ब्रिटिशों द्वारा आर्थिक शोषण का घृणित दृश्य भी इन पुनर्जागरण के पश्चिमीकृत नेताओं की आँखों को नम नहीं कर सका।

वास्तव में ये नेता नए मध्यम वर्ग के सदस्य थे जिनके भौतिक हित ब्रिटिशों द्वारा सुरक्षित थे, इसलिए वे राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था पर आक्रमण नहीं कर सके। दूसरी ओर, उनके व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक व्यवहार की द्वंद्वात्मकता ने उन्हें सामाजिक सुधारकों के रूप में कमजोर बना दिया।

दयानन्द एक महान् योगी, एक क्रान्तिकारी सुधारक, एक दार्शनिक, एक राजनीतिक चिन्तक और एक योद्धा थे। उन्होंने अपने देशवासियों की समस्याओं पर अपने तरीके से आक्रमण किया। उन्होंने अज्ञान को सभी दुखों का मूल कारण माना। उनका विचार था, "यह वासनाओं के बाद अशुद्ध वस्तुओं को स्वीकार करने और मरणशील वस्तुओं को अमर मानने में निहित है। मुक्ति इस अज्ञान के हरण पर निर्भर है। जब तक अज्ञान बना रहेगा, तब तक कोई मुक्ति नहीं है।" अतः एक क्रान्तिकारी सुधारक के रूप में उन्होंने मूर्तिपूजा, अस्पृश्यता, बाल-विवाह और सती-प्रथा जैसी बुराइयों के विरुद्ध लम्बा युद्ध छेड़ा। उन्होंने प्रचार किया कि गंगा के पवित्र जल में स्नान करने से व्यक्ति के पाप धुल नहीं जाते। व्यक्ति को अपने पापों का फल भोगना पड़ता है क्योंकि न्यायपूर्ण ईश्वर ऐसे कर्मकाण्डों से आसानी से धोखा नहीं खाता।

मूर्तिपूजा और बहुदेवतावाद पर आक्रमण करते हुए स्वामी जी ने कहा- "उस एक ईश्वर की उपासना करो जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापी, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु और न्यायपूर्ण है... वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माता, पालक और संहारक है। वह सभी आत्माओं को उनके कर्मों के अनुसार पूर्ण न्याय से फल प्रदान करता है, जिसके वे योग्य हैं, और उसी प्रकार के गुणों से सम्पन्न हैं।"

दयानन्द का अगला आक्रमण अंधविश्वासों पर था। उन्होंने स्वर्ग और नर्क में विश्वास नहीं किया और कहा- "ये मन की अवस्थाएँ हैं जो व्यक्ति अपने कर्मों के कारण अनुभव करता है। अच्छे कर्मों के लिए विशेष सुख का भोग और उसके साधनों का स्वामित्व (स्वर्ग) तथा दुष्कर्मों के लिए पीड़ा और उसके साधन (नर्क)।"

दयानन्द जाति व्यवस्था की आलोचना में उग्र थे। उन्होंने जाति, सम्प्रदाय, वर्ण और लिंग की सभी बाधाओं को तोड़ने का प्रयास किया जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती थीं, ईश्वर सभी का स्रष्टा होने के आधार पर सार्वभौमिक भाईचारे के सिद्धान्त का प्रचार करके उन्होंने जाति व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया। यह व्यक्ति की योग्यताओं, उपलब्धियों

और चरित्र के अनुसार निर्धारित होनी चाहिए। उनका मत था कि ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य परिवार में जन्मा व्यक्ति यदि उसके कार्य और स्वभाव उच्च नहीं हैं तो शूद्र बनना चाहिए। लेकिन दयानन्द ने समाज के चार गुणात्मक विभाजनों को स्वीकार किया जिसमें विचारक, द्रष्टा और शिक्षक सर्वोच्च स्थान पर हैं; लेकिन किसी भी ऐसी व्यवस्था की कठोरता का विरोध किया विशेष रूप से अस्पृश्यता का। महात्मा गाँधी ने इस क्षेत्र में दयानन्द के पर्याप्त योगदानों का मूल्यांकन किया- "स्वामी दयानन्द द्वारा हमें छोड़ी गई अनेक समृद्ध विरासतों में, अस्पृश्यता के विरुद्ध उनका स्पष्ट घोषणापत्र निःसन्देह एक है।"

आर्थोडॉक्सी के विरोध के बावजूद, दयानन्द ने सामाजिक सुधार के लिए संघर्ष किया और अन्तिम सांस तक जारी रखा। बहुत शीघ्र उन्हें यह एहसास हो गया कि तीन महत्वपूर्ण समस्याएँ- अशिक्षा, आर्थिक गरीबी और राजनीतिक निर्भरता का हल न होने तक सामाजिक जीवन में कोई सुधार सम्भव नहीं और भारतीय जीवन में कोई क्रान्ति नहीं हो सकती। उन्होंने इन समस्याओं को एक-एक करके उठाया। पहली समस्या को निर्मूल करने के सम्बन्ध में उन्होंने पश्चिमी शिक्षा को नापसन्द किया और राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार किया। उन्होंने सभी के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की योजना बनाई। "राज्य में ऐसा विधान होना चाहिए कि पाँचवीं या अधिकतम आठवीं वर्ष की आयु के बाद कोई अपने पुत्र-पुत्रियों को स्कूल से दूर न रखे। इस आदेश का पालन न करने वाले माता-पिता को राज्य द्वारा दण्डित किया जाए।" पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द ने कहा कि यह व्यापक होना चाहिए, ज्ञान की सभी शाखाओं का प्रतिनिधित्व करने वाला। भाषाओं, कलाओं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर समान जोर होना चाहिए। दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का उनके अनुयायियों (आर्य समाजियों) पर गहरा प्रभाव पड़ा जिन्होंने विविध शैक्षणिक संस्थान खोले। १८८५ में, उनकी मृत्यु के दो वर्ष बाद, लाहौर में दयानन्द एंग्लो-वैदिक हाई स्कूल की स्थापना हुई और कुछ वर्षों के अन्दर पंजाब और अन्यत्र अनेक हाई स्कूल, कॉलेज और गुरुकुल उनके स्मारक के रूप में उभरे। ये सभी संस्थान राष्ट्रीय आधार पर स्थापित किए गए और सभी ने दयानन्द द्वारा निर्धारित शिक्षा के आदर्शों का अनुसरण किया।

गरीबी की तीव्र समस्या पर, दयानन्द ने स्वयं चारों ओर मृत्यु और रोग, अभाव और भूख देखी थी। भारतीय उद्योग पतन की ओर थे और कृषि अस्त-व्यस्त थी। १८६० से १८८४ तक के अकाल विनाशकारी थे और लोगों को अतुलनीय कष्ट दिए गए, लाखों की हत्या की गई। दयानन्द का मत था कि भारत ने कभी ऐसी विपदा नहीं झेली। सोने की चिड़िया कहा जाने वाला यह देश जहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहती हो, सच कहा जाय तो यह भूमि वह दार्शनिक पत्थर थी जिसके स्पर्श मात्र से विदेशी मानस सोने में बदल जाता था, लेकिन इसके लोगों की अज्ञानता और अशिक्षा, दासत्व और स्वार्थ, निष्क्रियता और आलस्य ने प्रचुरता की भूमि को पूर्ण गरीबी और पीड़ा की भूमि में बदल दिया। दयानन्द ने टिप्पणी की कि आर्यावर्त्त तब तक पीड़ित होता रहेगा जब तक उसके लोग अंधविश्वास, निष्क्रियता और आलस्य से बँधे रहेंगे। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अपनाने, स्वदेशी उत्पादों से प्रेम और सर्वोपरि दासत्व के अन्त का प्रचार किया।

लेकिन दयानन्द का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन के अधीन अपने देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करना था। वे पश्चिम से उधार नहीं ले सकते थे और मानते थे कि कोई राष्ट्र विदेशी आधार पर अपना भवन नहीं बना सकता। इसलिए, उन्होंने अपने लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान दिया, और उनके ऊपर आधार रखने का। वेद, दयानन्द के अनुसार, भारत के धर्म, संस्कृति और सभ्यता के मूल स्रोत थे, वे भारतीय चिन्तन, दर्शन और ज्ञान के आधार थे और केवल वहीं भारतीय राष्ट्र के कट्टर पुनः Rijuvenation का बीज मिल सकता था। उन्होंने स्वराज के विचार को लोकप्रिय बनाया क्योंकि यह हमेशा सर्वोत्तम था। कैंपबेल-बैनरमैन से बहुत पहले, दयानन्द ने घोषणा की थी कि अच्छा शासन स्वशासन का विकल्प नहीं है। दयानन्द ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म से पहले ही स्वराज के लिए आवाज उठाई थी। धार्मिक प्रवचनों के दौरान भी, दयानन्द अपने देशवासियों को "विदेशी प्रभाव के विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध में जागृत" करने का प्रयास करते थे। उदाहरण के लिए, मूर्तिपूजा पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा- "हमने शत्रुओं की हार और हमारी

सेनाओं की विजय के लिए मूर्तियों पर निर्भर किया और इसलिए स्वयं प्रयास नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि हम पराजित हुए और देश का शासन, हमारी स्वतंत्रता और उसके साथ वाली सम्पत्ति और सुख-सुविधाएँ, सब हमारे शत्रुओं के हाथों में चले गए। हम लूटे गए और बेकर की घोड़ी तथा कुम्हार के गधे की भाँति दयनीय दशा में पहुँच गए।" पशु संरक्षण का प्रचार करते हुए उन्होंने वही कहा- दयानन्द जानते थे, मिस्टर हर्बर्ट रिस्ले कहते हैं, "देशभक्ति उत्साह की लौ दार्शनिक समझौते की ठण्डी, धूसर राख से आसानी से नहीं उठेगी और कि हिन्दू धर्म को सक्रिय राष्ट्रवाद की भावना प्रेरित करने से पहले, उसे काफी कुछ करना पड़ेगा।"

फिर, दयानन्द को अपने लोगों द्वारा अंग्रेजी के अपनाना नापसन्द था। उन्होंने हिन्दी के महत्व का प्रचार किया, पुरानी पंचायत व्यवस्था के पुनरुद्धार और एक राष्ट्रीय धर्म के पक्ष में खड़े हुए। राष्ट्रीय धर्म के विचार का प्रसार करते हुए, उन्होंने कभी किसी विदेशी धर्म पर आक्रमण नहीं किया। उन्होंने इस्लाम या ईसाई धर्म में असत्य तत्वों की निन्दा की, उसी प्रकार जैसे हिन्दू धर्म में की। उन्होंने विभिन्न धर्मों में केवल उन तत्वों की अधिक उग्रता से आलोचना की जो लोगों में परस्पर घृणा का प्रचार करते थे। उन्होंने सार्वभौमिक सत्य का प्रचार करने का प्रयास किया ताकि सभी मनुष्यों को एक धर्म के अन्तर्गत लाया जाए जिससे वे शान्ति से रहें और अपने साझा कल्याण के लिए कार्य करें। संक्षेप में, वे विभिन्न मतों को एक सार्वभौमिक धर्म के बैनर के अन्तर्गत लाना चाहते थे। इस्लाम के एक महान् समर्थक सर सैयद अहमद खान ने दयानन्द की प्रशंसा इस प्रकार की- "वे एक विद्वान् होने के अलावा, स्पष्ट रूप से कुलीन और आध्यात्मिक प्रकृति के पुरुष थे...... मैं स्वर्गीय स्वामी दयानन्द से बहुत अच्छी तरह परिचित था और मैंने हमेशा उनको महान् सम्मान दिया केवल इसलिए क्योंकि वे इतने उत्कृष्ट और विद्वान् पुरुष थे कि सभी धर्मों के लोगों को उनका सम्मान करना चाहिए, चाहे वे किसी भी धर्म के हों। वे वैसे भी इतने महान् पुरुष थे कि भारत में उनका कोई समकक्ष नहीं है।"

इसी प्रकार की राय मिस्टर सी. एफ. एंड्रयूज ने व्यक्त की, उन्होंने कहा- "स्वामी दयानन्द वास्तव में उस युग से श्रेष्ठ थे जिसमें हम अब रहते हैं...... मनुष्य उनमें, उनकी आध्यात्मिक तीव्रता में, उनके नायिक चरित्र में, उनके कठोर जीवन शैली में, उनके उच्च आदर्शों में, वैदिक काल स्वयं को पुनर्स्थापित देख सकते थे...... महान् स्वामी का व्यक्तित्व...... अपनी नायिक भावना की पूर्ण भव्यता में इतना चुम्बकीय, पुरुषोचित्, इतना उत्साही रूप से ईमानदार और साहसी था कि अन्यों ने उनकी मृत्यु से पहले उनकी प्रेरणा ग्रहण की और उनके सन्देश को उनकी भावना में आगे बढ़ाया।"

दयानन्द के उग्र राजनीतिक सन्देश का उनके अनुयायियों पर चमत्कारी प्रभाव पड़ा। आर्य समाजी अपने गुरु का जीवनकाल में और मृत्यु के बाद भी अनुसरण करते रहे। वे सभी राष्ट्रवादी थे इसलिए पूरे भारत में अच्छी संख्या में राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुए। उन्होंने पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के आन्दोलनों को प्रभावित किया। यहाँ तक कि बंगाल का राजनीतिक आन्दोलन (१९०५) भी आर्य समाज से प्रभावित था। लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द (मुंशीराम), एम. जी. रानाडे, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, अजीत सिंह, भगत सिंह और अन्य जैसे नेताओं को दयानन्द और उनके आर्य समाज से प्रेरणा मिली। दयानन्द केवल कुछ वर्ष आर्य समाज की स्थापना करने और उसका मुख्यालय लाहौर स्थानांतरित करने के बाद ही जीवित रहे लेकिन यह पंजाब में मजबूत जड़ें जमा चुका था और समय के साथ, अपने शैक्षणिक कार्य और मजबूत राष्ट्रवाद की भावना से, आधुनिक भारत की जीवन्त शक्तियों में से एक बना। "आर्य

समाज से", जे. एफ. सी. फुलर टिप्पणी करते हैं, "न केवल धार्मिक सुधार और राष्ट्रीय पुनरुद्धार उभरा बल्कि राष्ट्रवाद का एक धर्म उभरा जो १७८९ की फ्रांसीसी क्रान्ति से उत्पन्न राष्ट्रवाद के आदर्श जितना उग्र, आक्रामक और सर्वसमावेशी था।"

स्वामी दयानन्द के भारत की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं पर उग्र आक्रमण और विभिन्न समस्याओं के समाधान ने हमारे आधुनिक चिन्तन की नींव रखी। इस देश में राजनीतिक प्रगति, अन्यों से अधिक, इस महान् अग्रणी से प्रेरणा प्राप्त हुई है। महर्षि दयानन्द ने देश को परिस्थितियों द्वारा डाले गए दुःखद मानसिक और शारीरिक दासत्व को दर्दनाक रूप से महसूस किया था। यह बाद में महात्मा गाँधी द्वारा महसूस किया गया। उन्होंने बहुत बार व्यक्त किया और स्वीकार किया कि हमारा देश दयानन्द को कितनी गहन कृतज्ञता का ऋणी है।

लेखक- धनपति राय
साभार- महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक–अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास **भवानीदास आर्य,** मंत्री–न्यास **डॉ. अमृत लाल तापड़िया,** संयुक्तमंत्री–न्यास

प्रेम बढ़ाएँ, क्रोध हटाएँ

जो आदत पहले से पड़ चुकी है; क्रोध, कषाय, विकृति की जो जड़ें पहले जम चुकी हैं, उन्हें कैसे हटाएँ? निमित्तों से बचे रहें, यह बात तो ठीक है लेकिन जो कचरा पहले से ही जमा पड़ा है, उसे कैसे हटाएँ? हृदय का, स्वभाव का रूपान्तरण कैसे हो? यही मूल बात है हमें हृदयंगम करने की। इसके लिए पहला सूत्र है- अपने हृदय को प्रेम से परिपूरित करो। जहाँ क्रोध है, वहाँ प्रेम का निर्झर बहे। जहाँ वैर है, वहाँ स्नेह के फूल झरें। जो निन्दक और आलोचक है, उसे गले लगाएँ। ज्यों-ज्यों अन्तरमन में प्रेम का विस्तार होगा, त्यों-त्यों क्रोध-आक्रोश, वैर-वैमनस्य, विरोध-प्रतिशोध, घृणा-ईर्ष्या, छल-प्रपंच स्वतः कम होंगे। जीवन में प्रेम का प्रसार हो, प्रेम का विस्तार हो, प्रेम का रसपान हो। जीवन प्रेम का पर्याय हो। प्रेम ही तो धर्म का सार है, जीवन का रस है। जिसके हृदय में प्रेम नहीं, उसके हृदय में क्रोध और आक्रोश है। प्रेम और क्रोध- दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। जीवन में या तो क्रोध रहेगा अथवा प्रेम रहेगा। दोनों पहलू एक साथ नहीं रह सकते। फिर तो यह होगा कि निमित्त मिला प्रेम का और आप प्रेम करने लग गए; निमित्त मिला क्रोध का और आप क्रोध करने लग गए। आपका अपना स्वभाव क्या हुआ- प्रेम का या क्रोध का? अगर हम अपने स्वभाव को प्रेम से पूरित करते चले जाएँ, जीवन में एक ही सिद्धान्त आ जाए कि मेरा जीवन प्रेम से सराबोर रहे, तो आपका स्वभाव स्वतः ही कल्याणकारी और मंगलमय हो जाएगा। प्रेम जहाँ हीर-राँझा और लैला-मजनू की विरह-व्यथा है, प्रेम में जहाँ मीरा और गिरधर की भक्ति की भावना है, वहीं कृष्ण और सुदामा की मैत्री भी है। जीवन में प्रेम का उदात्त रूप होता चला जाए तो जीवन में प्रेम से बढ़कर कोई सिद्धान्त और धर्म नहीं होता। हमारा परिवार बँट रहा है, क्यों? क्योंकि प्रेम में कटौती हुई है। हमने प्रेम से अधिक महत्व शब्द, सिद्धान्त और विचार को दिया।

पशु में भी प्रभु निहारें

प्रेम की रसधार हृदय में फूटे। बच्चा है तो उसे भी प्रेम दो। आप मन्दिर जाकर उस बाल कन्हैयालाल को माखन-मिश्री चढ़ाते हैं और घर आने पर बच्चे से छोटी-सी गलती हो जाए तो चाँटा जड़ते देर नहीं लगाते, तो कहाँ गई आपकी वह बालकृष्ण की पूजा? क्या एक मूर्ति ही आपके लिए भगवत्-तुल्य है, आपकी अबोध सन्तान भगवान का रूप नहीं है? जब

हम मन्दिर में जाकर एक पंचधातु की मूर्ति को भगवान कह सकते हैं तो एक जीवित इंसान में प्रभु को क्यों नहीं निहार सकते? प्रेम का विस्तार होना चाहिए। अहिंसा का अर्थ केवल नकारात्मक नहीं है कि हिंसा मत करो, वरन् सकारात्मक है कि व्यक्ति एक दूसरे से प्रेम करे। माना मैंने आपसे हिंसा नहीं की, पर प्रश्न यह है कि क्या मैंने आपसे प्रेम किया? किसी को तकलीफ न पहुँचाना अच्छी बात है मगर किसी को सुख पहुँचाना-यह उससे भी अच्छी बात है। जैसे-जैसे हमारे कदम भलाई की ओर बढ़ते चले जाएँगे, बुराई अपने आप कम होती चली जाएगी; जैसे-जैसे हम प्रेम से भरते चले जाएँगे, क्रोध-आक्रोश-वैमनस्य-कषाय स्वतः उत्तरोत्तर कम होते चले जाएँगे।

हमारे प्रेम का विस्तार हो। अपनों के प्रति ही नहीं, गैरों के प्रति भी हमारा प्रेम बढ़े, सारे जगत् के प्रति प्रेम बढ़े। जब हम कहते है **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** तो फिर कौन वैरी और कौन मित्र; कौन अपना और कौन पराया? एक इंसान में ही प्रभु को मत देखो, एक पशु में भी प्रभु को निहारो।

सन्त एकनाथ के बारे में कहा जाता है कि जब वे रामेश्वरम्-यात्रा करने गये तो साथ काँवर में गंगाजल ले गए। रास्ते में उन्हें एक प्यासा गधा तड़पता हुआ मिल गया। एकनाथ ने उस गंगाजल से गधे की प्यास बुझाई। सहयात्रियों ने एकनाथ से कहा

कि यह क्या कर रहो हो? पचासों कोस की यात्रा को व्यर्थ कर रहे हो! एकनाथ ने कहा- मुझे नहीं लगता कि रामेश्वरम् का भगवान इस गधे से ज्यादा प्यासा होगा। जो गधे में गणेश देख ले, गधे की प्यास में भी भगवान की पुकार सुन ले, वह निश्चय ही भगवान रामेश्वरम् के दर्शन कर लेता है।

नजरिया सुधरे तो नजारा सुधरे

जिस व्यक्ति का प्रेम इतना विस्तृत हो, उस व्यक्ति के जीवन में स्वतः ही साधु का स्वभाव और देवत्व का आचरण रहता है। प्रेम से जुड़ा हुआ दूसरा पहलू है: करुणा। कोई हमारी उपेक्षा कर दे, तो उसके प्रति क्षमा और करुणा-भाव रखना चाहिए। स्वभाव में विजय पाने के लिए यह बड़ा कीमिया सूत्र होगा कि औरों के व्यवहार के प्रति हमारी ओर से करुणा भरा व्यवहार हो। हम अपने स्वभाव में करुणा को स्थान दें। प्रेम का प्रगाढ़ रूप ही करुणा है। अगर किसी ने कोई गाली दे दी या निंदा कर दी तो करुणाशील रहें। आप उसकी निन्दा या आलोचना को अहमियत न दें, वरन् जो आपकी निंदा करता है, आप उसकी तारीफ कीजिए। अगर कोई आपके दुर्गुणों को देखता है, तो आप उसके सद्‌गुणों को देखिए। कमियाँ किसमें नहीं होतीं! देखने वालों ने तो बुद्ध और महावीर में भी कमियाँ देखीं; राम और कृष्ण में भी कमियाँ देखी। अगर काले चश्मे से देखोगे तो सफेद दीवार भी काली दिखाई देगी। कमी सामने वाले में नहीं, कमी हमारी अपनी नजर में है। हम हर किसी को इतनी घृणित और तुच्छ दृष्टि से देखते हैं कि उसमें ओछापन ही दिखाई देता है, अच्छापन तो नजर ही नहीं आता। दुर्योधन जाएँगे दुनिया को देखने तो सिवाय बुराई के और कुछ दिखाई ही नहीं देगा और अगर युधिष्ठिर जाएँगे देखने तो अच्छाई के अलावा कुछ नजर ही नहीं आएगा। दृष्टि-दृष्टि का भेद है। लोग बड़े नेरो-माईड हैं, छोटी-सी बात का झट से बतंगड़ बना देते हैं। हाय राम, उसने तो ऐसा कर दिया; वह तो ऐसा ही है; अरे वाह, ऐसा कैसे हो सकता है, छोटी-छोटी बात! आदमी के पास ब्रॉड-माइंड होना चाहिए। हमें संकीर्ण बुद्धि से ऊपर उठते हुए, विस्तृत और विशाल दृष्टि रखनी चाहिए। अगर किसी से

कुछ गलत हो भी जाए, तो उसे नेगलेक्ट कर दो। उसकी गलती करुणा की पात्र है। मैं तो कहूँगा हम औरों की चूकों की ओर ध्यान ही क्यों दें। हम अपने में मस्त रहें, अपनी दुनिया सम्भालें। कोई और क्या करता है, इस पर ध्यान देने की बजाय, हम क्या करते हैं, अपने पर ध्यान दें। हम औरों के प्रति सहज हों। हृदय में करुणा हो। जिसके द्वारा जैसा भी हो रहा हो, सबके प्रति करुणा। माना हम करुणा के प्रति वशीभूत होकर भगवान् नेमिनाथ की तरह विवाह का त्याग नहीं कर सकते; राजा शिवि की तरह अपनी जाँघ का मांस काटकर नहीं दे सकते; कृष्ण की तरह हजारों-हजार गौओं की सेवा नहीं कर सकते, लेकिन किसी के द्वारा कहे ओछे शब्दों को तो माफ कर ही सकते हैं। माना हम अपने जीवन में अस्पताल न बनवा पाए, मगर रास्ते से गुजरते हुए कोई घायल

पंछी हमें मिल जाए तो उसे उठाकर प्यार से सहला तो सकते हैं। उसे लाखों का चढ़ावा नहीं चाहिए। उसे आपके प्यार भरे हाथों का स्पर्श और दो बूँद पानी चाहिए।

पर्व-विशेष के दौरान जीव-दया के नाम पर झोली फैला दी जाती है और हजारों रुपये इकट्ठे हो जाते हैं, मगर जीवों के प्रति हमारे हृदय में दया कितनी है? जोधपुर से नागौर आते समय खींवसर के बाद हमने देखा कि एक बछड़ा घायल पड़ा था। दूर से ऐसा आभास हो रहा था कि वह मर गया, पर तभी कौए के चोंच मारने से उसमें हलचल हुई। हम उसके पास पहुँचे और उसे उपचार के लिए नागौर भेजने के लिए विचार किया। हमारे साथ चलने वाले सहयोगी बड़ी मुश्किल से उसे नागौर ले आए। वे पशु-चिकित्सालय ले गए। डॉक्टरों ने कह दिया कि हम इसे गौशाला में ही देखेंगे। बछड़े को गौशाला ले गए। गौशाला वालों ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि दुनिया भर की गायों को जमा करने का क्या हमने ठेका ले रखा है? धर्म के नाम पर धंधा करने का ठेका तो ले रखा है, मगर दया-करुणा करने का दायित्व हमने नहीं लिया है। हम केवल चंदा वसूलने का ठेका ले सकते हैं, लोगों से अटकलबाजी से पैसा निकलवाकर उनके नाम पत्थरों पर लिखाने का धंधा कर सकते हैं, मगर किसी घायल प्राणी की सच्चे मन से सेवा हम नहीं कर सकते।

धर्म जीवित होगा प्रेम और करुणा से, सेवा और दया से। जो घायल पंछी को, घायल प्राणी को, घायल इंसान को देखकर भी उसकी सेवा-व्यवस्था के लिए नहीं पसीजता, वह इंसान नहीं पत्थर है, वह निष्ठुर स्वभाव का आदमी है, उसे होश तब आएगा, जब उसके साथ भी ऐसी ही बीतेगी।

परम प्रेम की रहे प्रेरणा, हृदय हमारा रोशन हो।
मैत्री-भाव के मधुर गीत से सारी धरती मधुवन हो।।
खुद जिएँ सुख से औरों को, सुख पहुँचाने का प्रण हो।
हँसता-खिलता हो हर चेहरा, स्वर्ग सरीखा जीवन हो।।
दीन-दुःखी जीवों की सेवा, परमेश्वर का पूजन हो।
घर आयों के आँसू पोंछें, खुशहाली हर आँगन हो।।
पथ-भूलों को पथ दर्शाएँ, धर्म-भावना हर उर हो।
हर दरवाजा राम-दुवारा, हर मानव इक मन्दिर हो।।

हर अन्तरघट में ऐसी भावना, ऐसी अन्तरदृष्टि हो कि हम सदा परम प्रेम की प्रेरणा से प्रेरित रहें। वैर की बजाय मैत्री का माधुर्य जीवन में निर्झरित रहे। मानवता की सेवा को परमात्मा की पूजा ही मानें। मानवता की भलाई को रूहानियत की इबादत मानें।

खुश रहें, प्रसन्न रहें

स्वभाव पर विजय प्राप्त करने के लिए एक और सूत्र है कि सदा-सर्वदा प्रसन्नचित्त रहें। मधुर वचन और मधुर व्यवहार के स्वामी बनें। सदा प्रसन्न रहना सर्व शक्तिमान ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है। 'हम अपने

स्वभाव में एकमात्र यही गुण आपूरित कर दें कि चाहे जैसी स्थिति आए, हम सदा प्रसन्न और मधुर रहेंगे, मानो आप अपने स्वभाव को जीत चुके, बदल चुके। हम शारीरिक पीड़ा में, मानसिक और भावात्मक आघातों के क्षण में भी सुमधुर और सुप्रसन्न रहें। आनन्द तो आत्मा का लक्षण है, सदा आनन्दित रहकर एक प्रकार से हम सदा अन्तरात्मा का ही जीवन जी रहे हैं।

देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध के समय उनके द्वारा किए गए सागर-मंथन से विष बाहर निकल आया था। आप भी भरपूर हँसी के द्वारा शरीर और दिमाग का विष बाहर निकाल सकते हैं। दुनिया में आखिर स्वर्ग वहीं होता है जहाँ हम एक दूसरों को देखकर हँसते और मुस्कुराते हैं। मुस्कुराते रहने वाला व्यक्ति क्रोधी व्यक्ति से ज्यादा शक्तिशाली होता है। अगली बार आप क्रोध की बजाय मुस्कुराकर काम करवा कर देखें, आश्चर्य! कम समय में ज्यादा अच्छा काम सम्पन्न हो जाएगा। मुस्कान की नौका पर बैठकर तो हम लोगों को पार ले जा सकते हैं, पर क्रोध की आग पर बिठाकर हम स्वयं को और उनको जलाने के सिवा कुछ नहीं कर सकते। इसलिए स्वभाव को सुन्दर बनाने के लिए हमेशा हँसते मुस्कुराते रहो।

ऐसा हुआ। एक जवान लड़का रात के अंधेरे में बिना लाइट जलाए मोटर साइकिल पर जा रहा था। पुलिस वालों ने देखा तो सामने आकर डण्डा बजाते हुए चिल्लाया-रुक तेरी मोटर साईकिल में लाइट नहीं है। नौजवान बोला- सामने से हट, मेरी मोटर साइकिल में ब्रेक भी नहीं है।

सौम्य बनाएँ अपना स्वभाव

जैसे अभी हँसे, ऐसे ही हर पल हँसते-मुस्कुराते रहो। जिसने हँसी के प्याले पीने सीख लिए, उसे फिर कोई और प्याला पीने की तमन्ना ही नहीं होती।

अंतिम अनुरोध : हम स्वार्थ से बचें और औरों के दोषों को माफ करें। औरों के प्रति अगर एक अँगुली उठाई, तो ध्यान रखा अपनी ओर तीन अँगुलियाँ उठ रही हैं। स्वभाव-विजय के लिए तो हमें पाँचों अँगुलियाँ अपनी ओर ही करनी हैं। औरों को क्या देखूँ, देखना है तो अपने आपको देखूँ कि मैं किस स्थिति में हूँ। मेरी चेतना कहाँ अटकी और भटकी है। अच्छे स्वभाव के लोग कभी किसी के बुरे स्वभाव पर ध्यान नहीं देते। बुरे स्वभाव के लोग अच्छे लोगों में भी बुराई के ही चिह्न ढूँढ़ निकाल लेते हैं। निश्चय ही हर किसी के स्वभाव में कोई-न-कोई पूर्णता और अपूर्णता दोनों ही होती हैं। वह अपवाद है, जो पूर्ण है। बाकी मानव मात्र कमोबेश एक ही स्वभाव के हैं। नेकी और बदी के लक्षण कम-ज्यादा हर किसी में मिल जाएँगे। जो किसी परिस्थिति में धैर्यशील देखा जाता है, वही अन्य किसी स्थिति में अधीर हो जाता है। स्वभाव को वही बदल सकता है, वही विजय प्राप्त कर सकता है, जो अपने स्वभाव से वाकिफ है, उसे बदलना चाहता है, उसके लिए प्रयास करता है। जब गंदगी खाद बनकर फूलों में खुशबू पैदा कर सकती है तो हम अपने स्वभाव को बदलकर लोगों के जीवन में रस क्यों नहीं घोल सकते।

ध्यान रखिए स्वभाव को सौम्य और निर्मल, मधुर और प्रेमपूर्ण बनाना संन्यास का, प्रव्रज्या और दीक्षा का व्यावहारिक रूप है। हम व्यसन-मुक्त हों; स्वस्थ और सौम्य जीवन के लिए कृत संकल्प हों, इतना काफी है।

लेखक- पूज्य श्री चन्द्रप्रभ जी
साभार- खुद को बनाएँ जीवन का इंजिनीयर

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

जहाँ लोग पूजा-पाठ, परिक्रमा, स्नान, मुण्डन आदि कार्यों के लिए जाते हैं प्रायः उस पवित्र स्थल को तीर्थस्थल कहते हैं। तीर्थ शब्द के अनेकानेक अर्थ मिलते हैं जिनमें से कुछ अर्थ हैं- सड़क, मार्ग, रास्ता, घाट, स्रोत, जलाशय, साधना अथवा मंत्रणा आदि। साहित्य में तीर्थ का एक अर्थ उपचार या साधन भी मिलता है तो एक अर्थ पवित्र या पावन भी। तीर्थ से तात्पर्य पुण्यकार्य के लिए अर्पित स्थान विशेष से भी है जो प्रायः किसी पवित्र नदी या सरोवर के किनारे बना हो तो उपचार, तरकीब, पुण्यात्मा, योग्य व्यक्ति तथा श्रद्धा का पात्र ये सब शब्द भी तीर्थ के अर्थ के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। मुक्त करने वाला या रक्षक भी तीर्थ के अर्थ के रूप में मिलता है लेकिन तीर्थ का जो सबसे उपयुक्त अर्थ प्रतीत होता है वह है तारने वाला या मोक्ष प्रदान करने वाला। इसीलिए तीर्थ स्थलों की कल्पना मोक्ष प्रदान करने वाले स्थलों के रूप में की गई है। मोक्ष की इच्छा है तो तीर्थस्थानों की यात्रा कीजिए।

मोक्ष और तीर्थ दोनों शब्द एक दूसरे के पर्याय दृष्टिगोचर हो रहे हैं लेकिन क्या मात्र एक स्थान विशेष या जड़ पदार्थ मोक्ष में सहायक हो सकता है? वस्तुतः वे सभी संज्ञा शब्द चाहे वे व्यक्ति हों, स्थान हों अथवा भाव हों, जो भी मनुष्य की श्रद्धा के केन्द्र हैं तीर्थ ही हैं। धर्मोपदेष्टा, अध्यापक अथवा ब्राह्मण (विद्वान्) भी तीर्थ है तो साथ ही उपदेश, शिक्षा और यज्ञ भी तीर्थ ही हैं। योग्य व्यक्तियों द्वारा किया गया पवित्र कार्य भी तीर्थ है तो जहाँ ये कार्य सम्पन्न किया जाए वह स्थल भी तीर्थ ही कहलाने लगता है। स्थान विशेष तीर्थ का प्रतीक बन जाता है। जब स्थान विशेष तीर्थ का रूढ़ हो जाता है तो तीर्थ का मूल तत्त्व विस्मृत हो जाता है। जब मन्दिर-मस्जिद, नदी या सरोवर का घाट या पर्वत शृंग तीर्थ है तो तीर्थयात्री और उसकी श्रद्धा भी तीर्थ है।

जब तीर्थयात्री ही नहीं होगा और उसमें श्रद्धा नहीं होगी तो तीर्थ का क्या प्रयोजन? शिक्षक भी तीर्थ है तो शिक्षा भी तीर्थ है और शिक्षणालय भी तीर्थ है। स्वयं शिक्षार्थी भी तीर्थ ही है। यहाँ चार शब्द हैं शिक्षार्थी, शिक्षक, शिक्षा और शिक्षणालय। चारों की प्रकृति भिन्न है लेकिन चारों का उद्देश्य एक ही है और वो है ज्ञान द्वारा स्वयं को जानना अथवा इसमें सहायक होना। आत्मज्ञान में सहायक होने वाले तत्त्व ही सच्चे तीर्थ हैं उनका स्वरूप चाहे जैसा भी हो। हमारे ग्रन्थों में प्रायः तीन प्रकार के तीर्थों का वर्णन मिलता है : स्थावर, जंगम और मानस तीर्थ।

स्थावर तीर्थ

स्थावर तीर्थ स्थल से तात्पर्य है भौगोलिक दृष्टि से स्थिर स्थान विशेष। विद्यालय, मठ, मन्दिर, मस्जिद, नदी के उद्गम स्थल और घाट, पवित्र पर्वत शृंग

सभी स्थावर तीर्थ की श्रेणी में ही आते हैं। गंगा, गोदावरी, मानसरोवर, प्रयाग, काशी, कैलाश, काबा, चार धाम, चार मठ, द्वादश ज्योतिर्लिंग ये सभी स्थावर तीर्थ माने गये हैं। कुम्भ स्नान के स्थल ही नहीं कुम्भ स्नान की तिथियाँ और समय भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं अतः क्षण विशेष भी तीर्थ की श्रेणी में ही सम्मिलित किये जा सकते हैं। (इन स्थानों से जब आत्मज्ञान की ओर ले जाने वाला सन्देश प्राप्त हो तभी वह तीर्थ है।)

तीर्थ शब्द अत्यंत विस्तृत है लेकिन अपनी संकुचित वृत्ति या दृष्टिकोण के कारण तीर्थ को हमने कुछ मन्दिर-मस्जिदों, गिरिजाघर और गुरुद्वारों अथवा नदी-जलाशयों तक सीमित कर दिया है। आज हमने केवल जड़ पदार्थों को तीर्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है। ये अलग बात है कि हमने इनकी संख्या में काफी वृद्धि कर ली है।

जंगम तीर्थ

जंगम से तात्पर्य है जो स्थायी अथवा स्थिर न हो। जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा सके। ब्राह्मण, (विद्वान्) साधु, शिक्षक ये सब जंगम तीर्थ की श्रेणी में ही आते हैं।

माता-पिता और गुरु भी किसी तीर्थ से कम नहीं। शिव ने अपने पुत्रों से कहा कि जो सबसे पहले तीनों लोकों की परिक्रमा करके लौटेगा वो पुरस्कार का अधिकारी होगा। कार्तिकेय तो अपने वाहन मयूर पर सवार होकर तीनों लोकों की परिक्रमा के लिए उड़ चले लेकिन गणेश ने मूषक पर सवार होकर अपने समक्ष उपस्थित माता-पिता की परिक्रमा कर ली और पुरस्कार जीत लिया। माता-पिता से बढ़कर तीर्थ कहाँ? माता-पिता, गुरु, ब्राह्मण, साधु, शिक्षक सभी तीर्थ हैं जो जंगम तीर्थ की श्रेणी में आते हैं। और यदि मुकाबले की बात करें तो माँ से बढ़कर कोई तीर्थ हो ही नहीं सकता। गोपालदास 'नीरज' तो माँ की गोद से बढ़कर कोई पवित्र स्थान मानते ही नहीं।

नीरज कहते हैं-

जिसमें खुद भगवान ने, खेले खेल विचित्र।
माँ की गोदी से अधिक तीरथ कौन पवित्र।।

मानस तीर्थ

लाला मौजीराम मौजी का एक शेर है:

दिल के आईने में है तस्वीरे-यार,
जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।

मानस तीर्थ वह तीर्थ स्थल है जो हमारे पास है और वह है हमारा मन। मन में उत्पन्न सात्त्विक भाव ही मानस तीर्थ की सृष्टि करते हैं। किसी स्थायी तीर्थ स्थल के लिए व्यक्ति को चलकर जाना पड़ता है।

व्ययसाध्य और श्रमसाध्य के साथ-साथ समयसाध्य भी है बाहरी यात्रा। हर व्यक्ति के लिए कहाँ सम्भव है? जंगम तीर्थ के लिए जाना पड़ेगा। सम्भव है कोई ब्राह्मण, साधु, शिक्षक घूमता हुआ आपके घर तक आ पहुँचे, आपके क्षेत्र में डेरा डाल ले लेकिन हो सकता है आप उसकी यात्रा न कर पाएँ। मानस तीर्थ की यात्रा विलक्षण है, अत्यन्त सुलभ है जब चाहें कर लें। मन में जब भी किसी सकारात्मक भाव की उत्पत्ति हो वह मानस तीर्थ की सृष्टि ही है और उससे एकाकार होना तीर्थयात्रा। आज तीर्थयात्राओं पर सब्सिडी को लेकर अदालतों को फैसला करना पड़ रहा है। ऐसी तीर्थयात्राओं से मानस की तीर्थयात्रा कहीं अधिक सुलभ और अधिक श्रेयस्कर है। शिक्षा, ज्ञान, धर्म, करुणा, सत्य, क्षमा, दया, दान, संतोष आदि सकारात्मक भाव जो मन के उन्नयन में सहायक हैं

मानस तीर्थ की ही सृष्टि करते हैं। मंत्र भी एक तीर्थ है और मंत्रोच्चारण से उत्पन्न भावसृष्टि एक तीर्थयात्रा।

तीर्थयात्रा शब्द के साथ मन में एक नाम प्रायः उभरता है और वो है श्रवण कुमार। श्रवण कुमार

अपने अन्धे माता-पिता को उनकी इच्छा के अनुसार बहँगी में बिठाकर तीर्थयात्रा पर ले जाता है। श्रवण कुमार स्वयं तीर्थयात्रा पर नहीं जाता अपितु अपने माता-पिता की इच्छा पूरी करने के लिए वह उन्हें तीर्थयात्रा पर ले जाता है। इससे उसकी स्वयं की तीर्थयात्रा भी प्रारम्भ हो जाती है। वह दोहरी तीर्थयात्रा करता है। माता-पिता की भावना का आदर करना उनकी इच्छा पूरी करने का प्रयास करना किसी भी प्रकार तीर्थयात्रा से कम नहीं है। यदि संकुचित दृष्टि का त्याग कर उदात्त भाव से देखें तो माता-पिता ही नहीं किसी की भी भावना का आदर करना उसकी इच्छापूर्ति में सहायक होना तीर्थयात्रा ही है।

तीर्थयात्रा क्यों करते हैं? तीर्थयात्रा का उद्देश्य है आध्यात्मिक विकास। आध्यात्मिक विकास मनुष्य को आनन्द प्रदान करता है। जब किसी की सहायता करते हैं अथवा उसकी इच्छापूर्ति में सहायक होते हैं तो भी आनन्द की ही प्राप्ति होती है। इस प्रकार का सुख और संतुष्टि भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। मन में सद्वृत्तियों का विकास भी तीर्थ की सृष्टि और तीर्थयात्रा ही है।

संकुचित दृष्टिकोण और जड़ता का त्याग ही वास्तविक तीर्थ है। **क्रमशः ....**

ए. डी. 106 सी., पीतम पुरा
दिल्ली - 110034
चलभाष- 9555622323

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
BHIM UPI

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

जीवन अमृत

जीवन की सफलता के सोपानों से युक्त यह पुष्प आपको सादर समर्पित है। यह मनुष्य संसार की समस्त कृतियों में सर्वोत्तम व अनुपम है, इसे प्राप्त होने के पश्चात् यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे किस प्रकार का बनाएँ। जीवन का उत्थान और पतन हमारे अपने हाथ में है। सुविचारों का संयोग उन्नति का और कुविचारों का संयोग हमारे पतन का कारण है।

जीवन जैसा मिला उसे और आगे बढ़ाने का प्रयास नहीं किया, उसे वैसा ही छोड़ दिया, केवल जीवित रहते हुए शारीरिक आवश्यकताओं तक ही ध्यान दिया तो यह मानव जीवन की पूर्ण उपलब्धि नहीं है। शारीरिक भोग और उसके लिए प्रयास तो अन्य प्राणियों द्वारा भी किया जाता है, और वे योग्यता के अनुसार प्राप्त भी करते हैं, इसलिए केवल शारीरिक सुख पूर्ण मानवीय विकास नहीं है। मानव जीवन तो वह प्रगति पथ है जिस पर चलते हुए हम जीवन के मुख्य लक्ष्य मोक्ष तक भी पहुँच सकते हैं।

मनुष्य को सन्देश देते हुए परमात्मा की वाणी वेद में कहा है- **उत्क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पड्बीशमवमुंचमानः।** - अथर्ववेद ८/१/४

अर्थात्- हे मनुष्य! तू ऊपर उठ, नीचे मत गिर। ऊपर उठने से तात्पर्य शारीरिक बनावट में ऊँचाई बढ़ाने से नहीं, छोटे से मकान से बड़ी गगनचुम्बी इमारत में रहने से भी नहीं, किसी छोटे पद से कोई बहुत बड़े पद पर बैठने से भी नहीं है। यहाँ ऊपर उठने से तात्पर्य जीवनशैली को उन्नत करने से है, जीवन की पवित्रता से, आत्मउन्नति से है। इस उन्नति के लिए पहले हमारे विचार शुद्ध पवित्र होने आवश्यक हैं। हमारे संकल्प व कर्मों का आधार है मन, इसमें जैसे विचार आएँगे वैसा ही कर्म होगा और वैसा ही परिणाम। मन के सम्बन्ध में कहा-

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

अर्थात् मन ही बन्धन व मोक्ष का कारण है। एक शायर ने इसे कुछ ऐसे कहा है-

दिल ही की बदौलत रंज भी है,
दिल ही की बदौलत राहत भी।
दुनिया जिसको कहते हैं,
वो दोजख भी है जन्नत भी।

सुख-दुःख, उत्थान-पतन, स्वर्ग-नर्क के भोग के मूल कारण विचार है। सुविचारों से जीवन में सुकर्म की प्रेरणा मिलेगी, परिणामस्वरूप उसके फल अच्छे

मिलेंगे यह निर्विवाद सत्य है। मन में सुविचार के लिए स्वाध्याय, सत्संग, संस्कारों की आवश्यकता है। वे क्या होने चाहिए, यही हमें समझना है। क्योंकि हमारे विचार ही मूलतः सुकर्मों के प्रेरक हैं जिसके परिणाम हमारे सुख-दुःख के भोग हैं।

मानवता रक्षक बहुमूल्य सिद्धान्तों का अनुसरण करके इसे उन्नत, सरल, सुखद और सफल बनाया जा सकता है तथा उन सिद्धान्तों की उपेक्षा करने से यही जीवन दुर्गम और दुःखमय भी बन सकता है। इसी जीवन में स्वर्ग सा सुख प्राप्त कर सकते हैं और यही जीवन अपने दुष्कर्मों से चिन्ता, भय और दुःखों के भोग से नर्क समान भी बन जाता है।

किन्तु मानव जीवन की सफलता तो परमात्मा की इस अनोखी सृष्टि का भोग करते हुए शारीरिक व आत्मिक उन्नति करने में है। पूर्ण सुखी जीवन तो वही है, जिससे हम स्वयं सुखी रहें और दूसरों को भी सुख पहुँचाएँ। यह तभी सम्भव है जब जीवन के महत्वपूर्ण रहस्य को हम समझें, उन पर विचार करें। जीवन में शुभ आचरण होने पर ही शारीरिक और आत्मिक सुख की प्राप्ति होना सम्भव है, और यही मानव जीवन का उद्देश्य है।

ध्यान रहे! मात्र भौतिक साधनों से प्राप्त बाहरी सुख तक सीमित रह जाना जीवन की पूर्ण सफलता नहीं है। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर जीवन में भोगे हुए समस्त भौतिक सुख हमें शान्ति प्रदान नहीं करते अपितु उनके प्रति राग, उनका आकर्षण और उन भोगों को न भोग पाने की असमर्थता अन्ततः हमारे दुःख के कारण भी बन जाते हैं। उस समय अपार धन, सम्पत्ति, परिवार कोई भी सहयोगी नहीं होता। सफल जीवन तो वही जीवन है जिसमें संसार से विदा होते समय मन में कोई पछतावा न हो, अपितु किए गए कर्मों से प्रसन्नता और सन्तोष मिले। अन्यथा रोते आए और रोते चले गए ऐसा जीवन तो अभिशाप है। मानव जीवन कल्याण से सम्बन्धित उपदेश जो वेद और हमारे विद्वान् पूर्वजों, ऋषियों के द्वारा दिए गए विचारों में उपलब्ध हैं उसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। इन विचारों का संग्रह कर और उन्हें सरल शब्दों में प्रस्तुत करना ही मेरा पुरुषार्थ है।

यदि जीवन संभलकर, समझकर जिया जाए तो उसमें सरलता, सरसता होगी और उस जीवन का आनन्द कुछ और ही होगा। जीवन की इस सफलता के लिए कुछ ग्रहण करना और कुछ त्यागना आवश्यक है। उदाहरण से इसे यूँ समझिए जैसे कोई व्यक्ति बीमार हो जाए तो वह किसी डॉक्टर, वैद्य, हकीम के पास जाकर अपना इलाज करवाता है। उसे बीमारी से मुक्ति दिलाने के लिए डॉक्टर उस मरीज को दो बातें बताता है। पहली उसे क्या सेवन करना है, कौन सी दवाई कब कैसे लेना, भोजन में क्या खाना, किस प्रकार के साधनों का उपयोग करना और दूसरा किस प्रकार की वस्तुओं को नहीं खाना, किसका परहेज करना आदि बातें बताता है।

डॉक्टर के इन दोनों निर्देशों का पालन करना प्रत्येक मरीज के लिए आवश्यक है। इनमें से किसी एक का भी पालन न करने पर दूसरे का कोई लाभ नहीं होगा या उतना नहीं होगा, जितना होना चाहिए। मान लीजिए किसी व्यक्ति को मधुमेह (डायबिटीज) की बीमारी है तो ऐसे मरीज को डॉक्टर कुछ दवाई और शारीरिक श्रम करने का, चलने, प्राणायाम करने की सलाह देता है। दूसरी सलाह वह देगा कि उन तमाम वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए अथवा कम करना चाहिए जिनमें शक्कर होती है।

यदि डॉक्टर की सलाह मानकर ऐसा कोई करेगा तो लाभ अवश्य होगा और इन दोनों का पालन न करने अथवा दो में से किसी एक का पालन न करने पर लाभ नहीं होगा। दवाई लेकर भी परहेज न करे, खूब मिठाई खाता रहे तो लाभ नहीं होगा और दवाई न ले केवल परहेज करे तो भी लाभ नहीं होगा। ठीक होने के लिए दोनों बातों को मानना अर्थात् कुछ प्रारम्भ करना व कुछ छोड़ना आवश्यक है। **क्रमशः ....**

- प्रकाश आर्य
मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत

स्वास्थ्य

उर्ध्ववात (प्रति लोमवात) कारण व चिकित्सा

वर्तमान काल में जिसे गैस, वायुगोला या गैस्ट्रिक की समस्या कहते हैं, उसका आयुर्वेद के ग्रन्थों में उर्ध्ववात, प्रतिलोमवात व मूढ़वात के नाम से वर्णन मिलता है। आजकल विरुद्ध व विकृत आहार-विहार एवं स्वस्थवृत्त के नियमों का पालन न होने के कारण इस रोग के रुग्ण बहुत बड़ी संख्या में देखने को मिलते हैं। प्रायः लोग कहते हैं कि मुझे गैस रोग हो गया है। गैस का मतलब वायु से है। वायु या गैस स्वयं में कोई रोग नहीं है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में बताये गये त्रिदोषों मे से वायु (वात) भी एक दोष है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) की विकृति से शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं। जब ये त्रिदोष शरीर में सम अवस्था में होते है तो शरीर स्वस्थ रहता है और इनके असन्तुलन व विकृति से रोग उत्पन्न होते हैं। वात दोष की विकृति से होने वाले ८० प्रकार के रोगों का आयुर्वेद शास्त्रों में वर्णन मिलता है, उनमें से उर्ध्ववात भी एक वात रोग है।

शरीर की परिभाषा का वर्णन करते हुए शरीर को उर्ध्व व अधोभाग इन दो भागों में विभक्त किया गया है। नाभि से ऊपर के भाग को उर्ध्व व नीचे के भाग को अधो भाग कहते हैं। जब विकृत वायुदोष शरीर के उर्ध्व अर्थात् ऊपर की ओर गति करता है, उसको उर्ध्ववात, प्रतिलोमवात व गूढ़वात कहते हैं।

कारण- मिथ्या आहार-विहार से, आम अर्थात् अपक्व भोजन रस के उत्पन्न होने से, मल-मूत्र अपान वायु के वेगों को रोकने से, अन्नपान के अति व हीन योग के कारण जठराग्नि के मन्द होने से, देश व काल के विरुद्ध भोजन करने से, अत्यधिक मात्रा में तले हुए व गरीष्ठ भोजन करने से, शादी, विवाह आदि समारोह में विरुद्ध व अधिक मात्रा में भोजन ग्रहण करने से, ठण्डा एवं बासी भोजन खाने से, पूर्व में खाये गये भोजन के पचने से पहले पुनः भोजन करने से, मन्दाग्नि में भोजन करने से, काम-क्रोध-लोभ-मद-मोह आदि मानसिक कारणों से, चिन्ता एवं भय से, अत्यधिक उपवास करने से व उपवास के पश्चात् गरीष्ठ भोजन करने आदि कारणों से जठराग्नि मन्द हो जाती है। इससे आमाशय में आम रस की उत्पत्ति होकर उर्ध्ववात नामक भयंकर व्याधि उत्पन्न होती है।

लक्षण- उर्ध्ववात में अत्यधिक मात्रा में उदगार (डकार) आती हैं, पेट में गुड़गुड़ाहट व भारीपन होता है। आध्मान, अपानवायु का साफ न होना, उदरशूल, उरः शूल, पिण्डिलियों में एठन, हृदय को वेदना, पेट का फूलना, विबन्ध, क्षुधामांद्य, चक्कर, आँखो के सामने अँधेरा होना, कांस, श्वास, प्रतिश्याय और गम्भीर अवस्था में बेहोशी, हाथ-पैर की अँगुलियों में एठन, आँखों में भय व होठ बन्द हो जाते हैं।

चिकित्सा- सर्वप्रथम तो निदान परिवर्जन अति आवश्यक है, रोगोत्पत्ति कारक कारणों के छोड़े बिना उपचार असम्भव है। तत्पश्चात् विकृत एवं प्रतिलोम गति प्राप्त दोषों को सम अवस्था में लाने एवं आमदोष के पाचन हेतु शुण्ठी युक्त उष्ण जल के पान से लंघन कराना चाहिए। इससे आमदोष का पाचन होकर अग्नि प्रदीप्त हो जाती है और वायु की गति अनुलोम (नीचे की ओर) हो जाती है।

औषध चिकित्सा- प्रातः दो चम्मच मेथी दाना पानी से लेने से वायु शान्त होती है। मेथी दाना लेने से आमदोष का पाचन होता है, पेट साफ होता है और भूख लगती है। उदरशूल भी ठीक होता है। अजमोदादि चूर्ण १ ग्राम, शिवाक्षार पाचन चूर्ण१ ग्राम, अविपत्तिकर चूर्ण १ ग्राम और शंख भस्म एक मिली ग्राम। ऐसी १-१ मात्रा दो बार भोजन बाद जल से देवें। चित्रकादि वटी २ गोली, महाशंख गटी २ गोली। ऐसी एक-एक मात्रा खाने के बाद जल से देवें।

इनके अतिरिक्त आयुर्वेदिक बहुत से औषध योग बाजार में उपलब्ध हैं जिनमें से प्रमुख हैं- लवण भास्कर चूर्ण, हिंग्वष्टक चूर्ण, अग्नि संदीपन चूर्ण, हरीतकी चूर्ण, हिंग्वादि चूर्ण, एरण्ड तैल, अभयारिष्ट, पंचकोलासव, द्राक्षासव, दशमूलारियर आदि। अपने चिकित्सक के परामर्श से अवस्थानुसार इनका प्रयोग कर सकते हैं।

पथ्य- मूंग, चावल, लौकी, तुरई, गाजर, मेथी, लहसुन, अदरक, हल्दी, सौंठ, अजवायन आदि का सेवन इस रोग में लाभदायक है।

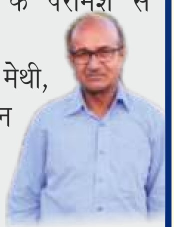

वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३- श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर- ६, उदयपुर (राज.)

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

गतांक से आगे .....

पदलिप्सा में आकण्ठ डूबे आर्य समाज के वर्तमान लोगों को सीखना चाहिए कि जब मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना हुई, तो स्वामी जी महाराज से निवेदन किया गया कि वे सभापति बनें अथवा आर्य समाज के अधिनायक बनें। उन्होंने विनम्रतापूर्वक इसे अस्वीकार करते हुए केवल सभासद बने रहना स्वीकार किया और वे अन्य सदस्यों की तरह चन्दा भी देते रहे। हमारे आचार्य ने इस प्रकार एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि आर्य समाज के माध्यम से सेवा करने में पदों का किंचित मात्र भी महत्व नहीं है।

आज उसी आचार्य के आर्य समाज में पदों को लेकर जिस प्रकार नीचे से लेकर ऊपर तक सिर-फुटौवल हो रही है, और उससे आर्य समाज की जितनी जग-हँसाई हो रही है, वैसा सम्भवतः कभी किसी ने सोचा भी न था।

मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना के साथ ही महर्षि दयानन्द के फोटो के सन्दर्भ में भी बात उठी। बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा लिखित जीवन-चरित्र में इस सम्बन्ध का जो भाग है, उसे हम शब्दशः उद्धृत करते हैं- “आर्य मन्दिर में हमारा फोटो न रखा जाए।”

हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने स्वामी जी का फोटो लेना चाहा, तो उन्होंने इस पर यह आपत्ति की कि भविष्य में यह सम्भावना हो सकती है कि लोग, और विशेषकर आर्य समाज के लोग, उसमें आडम्बर प्रारम्भ कर दें। हरिश्चन्द्र ने उनका फोटो तो ले लिया, परन्तु आर्य समाज मन्दिर में उस फोटो को नहीं रखा।

यहाँ हम यह निवेदन करना चाहेंगे कि स्वामी जी ने फोटो लेने पर आपत्ति इसलिए की थी कि भविष्य में लोगों द्वारा उनकी प्रतिकृति की पूजा जैसे आडम्बर प्रारम्भ न कर दिए जाएँ। यदि हर प्रकार की ऐसी सावधानी बरती जाए, जिससे फोटो या स्टैच्यू के सन्दर्भ में मूर्ति-पूजा जैसा कोई प्रसंग उत्पन्न न हो, तो हमारी मान्यता यह है कि इसमें स्वयं स्वामी जी के निर्देश का उल्लंघन नहीं होता।

हमने नवलखा महल में स्वामी जी का स्टैच्यू ऐसे स्थान पर लगाया है कि लगभग तीन वर्ष हो गए, पर आज तक एक भी ऐसा प्रसंग नहीं आया कि किसी ने उनके चरण-स्पर्श किए हों अथवा उन्हें माला पहनाई हो। अतः यह आपके ऊपर है कि आप सिद्धान्तों की रक्षा किस प्रकार करते हैं।

आप हमसे सहमत हों या न हों, परन्तु हमें लगता है कि आज स्वामी दयानन्द के चित्रों को देखकर अथवा इक्का-दुक्का जो स्टैच्यू हैं, उन्हें देखकर भी लोग उन्हें पहचान नहीं पाते और उन्हें स्वामी विवेकानन्द समझ बैठते हैं। इसका कारण यही है कि उनके फोटो व्यापक रूप से प्रचारित नहीं किए गए और उनके स्टैच्यू भी नहीं बनाए गए। इनका अपना महत्व है।

हाँ, निश्चित रूप से ये मूर्ति-पूजा के साधन नहीं बनने चाहिए और न ही इनके माध्यम से गुरुडमवाद फैलना चाहिए, क्योंकि स्वामी जी पार्थिव-पूजा और गुरुडमवाद के घोर विरोधी थे।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

निःशुल्क स्कूल बैग्स वितरण

आर्य समाज हिरण मगरी, सेक्टर ४, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय की १५० छात्राओं को डी. एस. क्लासेज, भूपालपुरा के सौजन्य से बुधवार को स्कूल बैग्स वितरित किए गए। विद्यालय के उप मंत्री भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि विद्यालय के संरक्षक प्रो. डॉ. अमृतलाल

तापड़िया के सान्निध्य में हुए कार्यक्रम में दानदाता ध्रुव शर्मा, ऐश्वर्य, सीताराम और शर्मिष्ठा शर्मा का गायत्री मंत्र पट्टिका से अभिनन्दन किया गया। स्वागत उद्बोधन में मानद निदेशक पुष्पा सिन्धी ने कहा कि विद्यालय में अधिकांश छात्राएँ आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों की हैं जिन्हें शिक्षा के साथ-साथ संस्कार और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

विद्यालय के सचिव कृष्ण कुमार सोनी ने कहा कि पिछले २५ वर्षों से निःशुल्क शिक्षण द्वारा बालिका शिक्षा, संस्कार और व्यक्तित्व निर्माण के लिए विद्यालय समर्पित भाव से समाज की सेवा कर रहा है। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि सुनीता शर्मा, श्रीमती प्रेमलता मेनारिया और नाजुक छाजेड़ ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर मोटिवेशनल स्पीकर ध्रुव शर्मा ने सभी छात्राओं को निःस्वार्थ भाव से समाज सेवा करने योग्य बनने हेतु परिश्रमपूर्वक अध्ययन करने का आह्वान किया। उन्होंने छात्राओं को नियमित और समय पर स्कूल आने, सूर्योदय से पहले जागने, समय की पाबन्दी, नित्य ध्यान करने का संकल्प दिलवाया। अन्त में छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सामूहिक कृतज्ञता गीत, शान्ति पाठ और जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- कृष्ण कुमार सोनी, सचिव

शोक समाचार

सूरीनाम के पूर्व राष्ट्रपति श्री चन्द्रिका प्रसाद सन्तोखी जी का निधन

आर्यसमाज और वैदिक धर्म के दृढ़ अनुयायी एवं दक्षिण अमेरिकी देश सूरीनाम के पूर्व राष्ट्रपति श्री चन्द्रिका प्रसाद सन्तोखी जी का दिनांक ३० मार्च, २०२६ को ६७ वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया।

श्री संतोखी जी सूरीनाम के २०२० से २०२५ तक राष्ट्रपति रहे। उन्होंने अपने पद और गोपनीयता की शपथ वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच संस्कृत में ली थी।

गत वर्ष २०२५ में दिल्ली में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आप बतौर अतिथि के रूप में सम्मिलित भी हुए थे।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को अपनी भवभीनी श्रद्धांजली सम्प्रेषित करता है एवं प्रार्थना करता है कि परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आर्य समाज हिरण मगरी की नवीन कार्यकारिणी गठित

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर ४, उदयपुर की ३ मई २०२६ रविवार को वर्ष २०२६-२७ हेतु नवीन कार्यकारिणी सर्व सम्मति से गठित हुई। चुनाव अधिकारी आर्य समाज; उदयपुर के प्रधान प्रकाश श्रीमाली द्वारा सम्पन्न करवाई गई।

प्रक्रिया में प्रधान- संजय शाण्डिल्य, मंत्री- डॉ. वेदमित्र आर्य, कोषाध्यक्ष- रमेश चन्द्र जायसवाल, उप प्रधान- कृष्ण कुमार सोनी

और ललिता मेहरा, उप मंत्री- भूपेन्द्र शर्मा और सुभाष चन्द्र कोठारी, पुस्तकालयाध्यक्ष-सत्य प्रकाश शर्मा और प्रचार मंत्री-सरला आर्या घोषित किए गए। अंतरंग सदस्य के रूप में प्रो. डॉ. अमृत लाल तापड़िया, शारदा गुप्ता, भँवर लाल आर्य, अम्बा लाल सनाढ्य, डॉ. एस के माहेश्वरी, चन्द्र कान्ता वैदिका, देवेन्द्र कुमार आर्य, प्रीति चौहान और दिनेश अग्रवाल घोषित किए गए। विगत १३ वर्षों से प्रधान के रूप में समर्पित सेवाएँ दे रहे भँवर लाल आर्य को समाज के संरक्षक के रूप में सुशोभित किया गया। सभी घोषित पदाधिकारियों और अंतरंग सदस्यों का गायत्री मंत्र पट्टिका से अभिनन्दन किया गया। चुनाव अधिकारी श्री प्रकाश श्रीमाली ने अपने उद्बोधन में सामूहिक प्रयासों से महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढ़ाने का आह्वान किया।

आरम्भ में विगत वर्ष की गतिविधियों सम्बन्धी आर्य समाज हिरण मगरी का प्रतिवेदन डॉ. वेदमित्र आर्य द्वारा, आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का प्रतिवेदन विद्यालय सचिव कृष्ण कुमार सोनी द्वारा और आर्य समाज का वित्तीय लेखा-जोखा कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र जायसवाल द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दयानन्द कन्या विद्यालय की मानद निदेशक पुष्पा सिन्धी ने विद्यालय की प्रगति की जानकारी दी। आभार डॉ. वेदमित्र आर्य द्वारा ज्ञापित किया गया। आर्य समाज हिरण मगरी के पुरोहित इन्द्र प्रकाश वैदिक द्वारा कराए गए शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- भूपेन्द्र शर्मा, उप मंत्री-आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर ४, उदयपुर

मनुष्य को कंपास के बिना किसी समुद्र में छोड़ दिया जाए और कहा जाए कि दूसरे देश तक अपनी यात्रा करें तो क्या यह सम्भव है। कदापि नहीं। परन्तु पक्षियों में यह अद्भुत क्षमता पाई जाती है। प्रवासी पक्षी भोजन, अनुकूल मौसम और सुरक्षित प्रजनन स्थलों की तलाश में हजारों मील की यात्रा करते हैं। जब किसी क्षेत्र में सर्दी बहुत बढ़ जाती है, पानी जम जाता है या भोजन कम हो जाता है, तब वे गर्म और अनुकूल स्थानों की ओर उड़ जाते हैं। मौसम बदलने पर वे फिर वापस लौट आते हैं।

वे यह लम्बी यात्रा प्रकृति से मिले अद्भुत दिशा-ज्ञान के सहारे करते

हैं। पक्षी सूर्य, तारों, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र, नदियों, पहाड़ों और हवाओं की दिशा को पहचानकर अपना मार्ग तय करते हैं।

उदाहरण के लिए, साइबेरिया और मध्य एशिया से आने वाले अनेक पक्षी हर वर्ष भारत की झीलों और आर्द्रभूमियों में सर्दियाँ बिताने आते हैं। चिलिका झील, नल सरोवर और केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान जैसे स्थान उनके प्रमुख विश्राम स्थल हैं।

जलवायु परिवर्तन प्राचीन यात्राओं को बदल रहा है

बढ़ते तापमान और अनियमित वर्षा इन प्राकृतिक चक्रों को बदल रहे हैं। आर्द्रभूमियाँ अब तेजी से मानवीय गतिविधियों का केन्द्र बनती जा रही है। जब आर्द्रभूमियाँ समय से पहले सूख जाती हैं या अचानक बाढ़ग्रस्त हो जाती हैं, तो प्रवासी पक्षियों को यात्रा के दौरान भोजन के अवसर खोने पड़ते हैं। पर्यावरण में छोटे-छोटे परिवर्तन भी पूरे प्रवासी मार्ग (फ्लाईवे) पर गहरा असर डालते हैं।

पर्यटन, नौकायन, मछली पकड़ना, पशु चराई और आधारभूत संरचना परियोजनाएँ पक्षियों के आवासों के साथ टकरा रही हैं। ये गतिविधियाँ अलग-अलग देखने पर सामान्य लग सकती हैं, लेकिन बार-बार होने वाला व्यवधान पक्षियों को लगातार सतर्क बनाए रखता है, जिससे वे अपनी ऊर्जा बचा नहीं पाते।

जो पक्षी लगातार व्यवधान से बचने में अत्यधिक ऊर्जा खर्च करते हैं, वे अपनी प्रवास यात्रा पूरी करने या सफलतापूर्वक प्रजनन करने में असफल हो सकते हैं। कुछ प्रजातियाँ तो अन्ततः वापस आना ही बन्द कर देती हैं। यह चिन्ता जनक है।

इन ठहरने वाली जगहों को बचाने की लड़ाई

बढ़ती चुनौतियों के बावजूद, कई संरक्षण प्रयास उम्मीद जगा रहे हैं। कई आर्द्रभूमियों को रामसर साइट घोषित किए जाने से भी इन संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।

हम क्या कर सकते हैं

- ☞ आर्द्रभूमियों (वेटलैंड्स) को कूड़ा फेंकने की जगह नहीं, बल्कि जीवित प्राकृतिक तंत्र समझें।
- ☞ सीवेज, प्लास्टिक और फैक्ट्री का कचरा झीलों और दलदली क्षेत्रों में जाने से रोकें।
- ☞ प्रवास के मौसम में पक्षियों के क्षेत्रों में शोर, तेज रोशनी और अन्य परेशानियाँ कम करें।
- ☞ आर्द्रभूमियों को अतिक्रमण और बिना योजना वाले निर्माण से बचाएँ।
- ☞ खराब हो चुकी झीलों और दलदली क्षेत्रों को फिर से सुधारने के प्रयासों का समर्थन करें।
- ☞ जलकुम्भी जैसी हानिकारक विदेशी वनस्पतियों को हटाकर जल सन्तुलन बनाए रखें।
- ☞ पानी का सही उपयोग करें और प्रदूषण कम करें।
- ☞ पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा दें, जिससे पक्षियों के आराम और घोंसले बनाने वाले क्षेत्रों को नुकसान न पहुँचे।
- ☞ पक्षियों की निगरानी और नागरिक विज्ञान अभियानों में भाग लें।
- ☞ समाज और स्कूलों में आर्द्रभूमियों के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाएँ।
- ☞ संरक्षण समूहों और वेटलैंड सुरक्षा अभियानों का समर्थन करें।

यह समझें कि आर्द्रभूमियाँ बाढ़ नियंत्रण, भूजल संरक्षण और जैव विविधता के लिए बहुत जरूरी हैं।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने आचार्य स्वदेश जी

आर्य समाज के विस्तार की दृष्टि से सबसे बड़े प्रान्त उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन सम्पन्न हो गए। इसमें वेद मन्दिर, मथुरा के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश जी को निर्विरोध प्रधान पद पर निर्वाचित किया गया।

उत्तर प्रदेश के आर्यों में आचार्य जी के प्रधान बनने को लेकर अत्यन्त उत्साह का वातावरण है। सबका यह मानना है कि वर्षों से सुप्त पड़ी प्रादेशिक सभा में अब जान आएगी और उत्तर प्रदेश आर्य समाज एक अंगड़ाई लेकर नवीन सोपानों का स्पर्श करने हेतु तैयार हो गया है।

आचार्य स्वदेश जी से बातचीत में उन्होंने कहा कि सबसे पहले आर्य प्रतिनिधि सभा के अंगभूत धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा और न्याय सभा की विधिवत् स्थापना करना उनकी प्राथमिकता होगी। उसके पश्चात् पूरे प्रदेश में प्रचार-प्रसार में अत्यधिक तेजी लाकर महर्षि दयानन्द जी के विचारों को सर्वत्र प्रसारित करना तथा आर्य समाज के कार्यक्रमों को लागू करना उनका प्राथमिक उद्देश्य रहेगा।

उन्होंने उत्तर प्रदेश के सभी आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं को अपने निर्वाचन हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

न्यास की ओर से आचार्य श्री को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

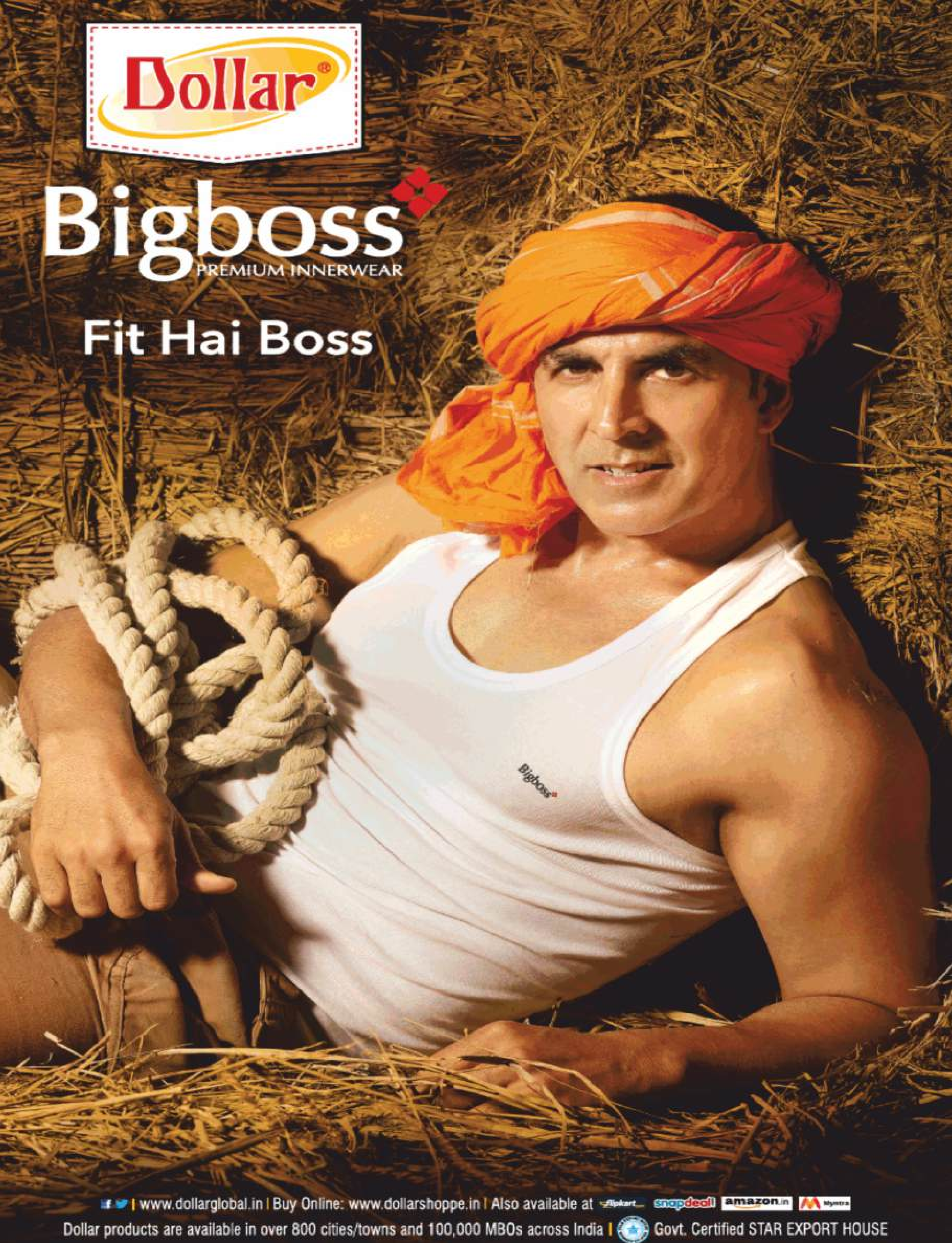
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 | June-2026 | Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

मनुष्य! जो कुछ इस संसार में जगत् है, उस सब में व्याप्त होकर नियन्ता है, वह ईश्वर कहाता है। उस से डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायाचरणरूप धर्म से अपने आत्मा से आनन्द को भोग।

सत्यार्थ प्रकाश; सप्तम समुल्लास पृष्ठ १७१

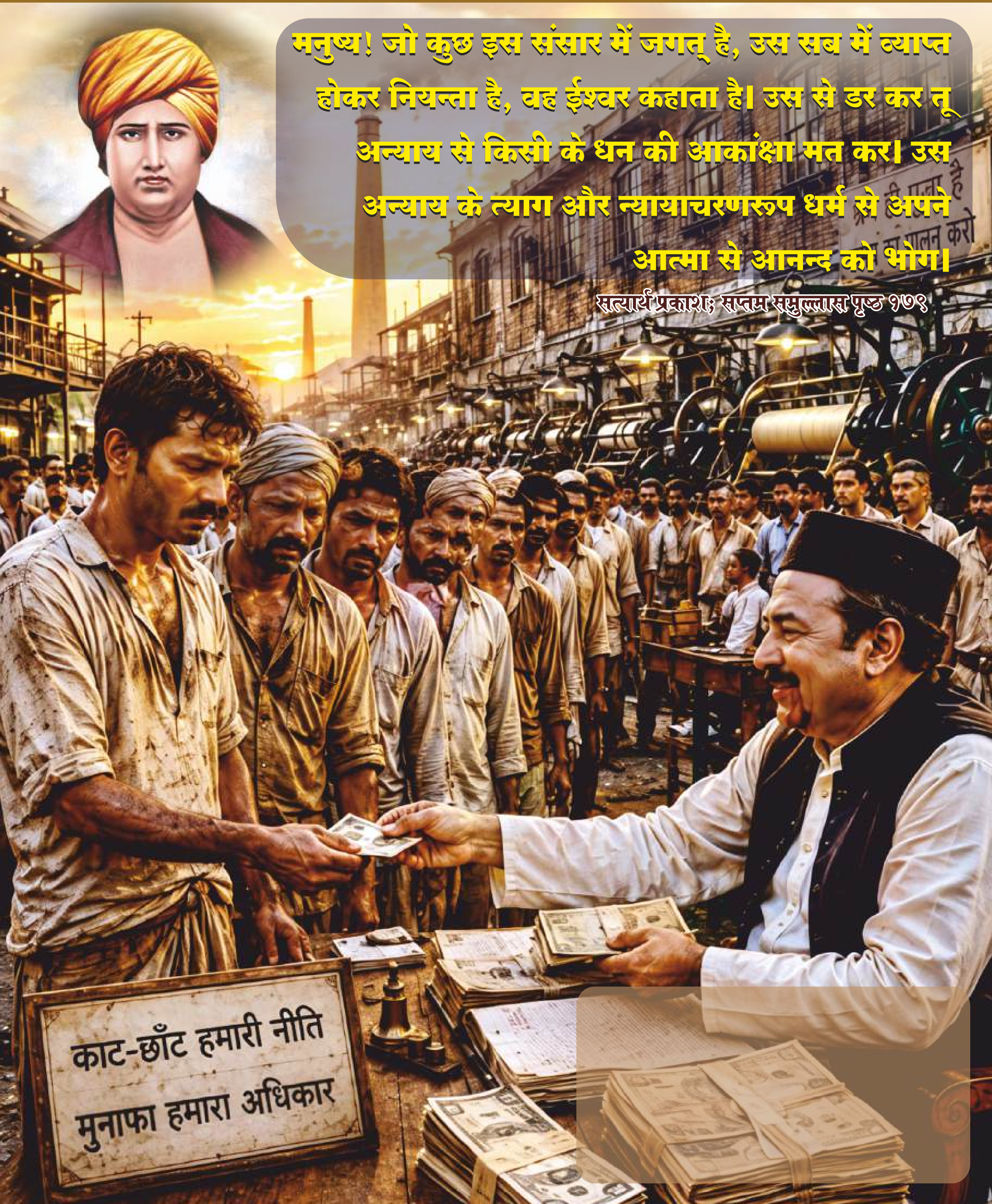

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर